चन्दामामा
मई १९७९

अंतर्राष्ट्रीय बाल वर्ष १९७९ के उपलक्ष्य मे

chic-modithread

पेश करते हैं अपनी प्रथम

बच्चों के लिए नीडलवर्क प्रतियोगिता

भाग कैसे लें?

प्रतियोगिता प्रवेश पत्र में, ऊपर दिखाए गये हाथी का डिज़ाइन अपने सही आकार में छापा गया है. तुम इस डिज़ाइन या अपने मनपसंद किसी भी डिज़ाइन को कम से कम 12 C.M. X 12 C.M. के आकार में एम्ब्रॉयडरी, बुनाई, क्रोशिया, मशीनकाम, जड़ाऊ काम (नक्काशी) या दस्तकारी द्वारा बना सकते हो. कसीदाकारी का काम सिर्फ़ मोदीथ्रेड से ही किया जाना चाहिए. प्रविष्टियों की परख सफ़ाई, खूबसूरती, रंगों के चुनाव और इस्तेमाल किए गये टाँकों के आधार पर की जायगी. हर प्रविष्टि के साथ पूरी तरह भरा हुआ प्रतियोगिता प्रवेश कूपन और इस्तेमाल किए गये मोदीथ्रेड के लेबल होना ज़रूरी है. प्रतियोगिता प्रवेश कूपन और नियम व शर्तों का प्रपत्र मोदी धागों के सभी विक्रेताओं, मोदी धागों की क्राफ्ट शॉप, मोदीथ्रेड के डिपो और वितरकों तथा शिक पत्रिका के अप्रैल, मई, जून और जुलाई १९७९ के अंकों में मिलेगा.

जीतने के कई अवसर!

सारे देश और प्रतियोगिता को १० क्षेत्रों में बाँटा गया है और हर क्षेत्र के लिए ४६२ पुरस्कार है. हर क्षेत्र की प्रथम पुरस्कार प्राप्त प्रविष्टि को शानदार राष्ट्रीय पुरस्कार के लिए चुना जायगा. अपनी प्रविष्टि मोदी धागों के अपने क्षेत्र के डिपो में भेजो. डिपो के पते नियम व शर्तों में दिए गये है.

हर क्षेत्र में दो अलग-अलग उम्र के समूहों को अलग-अलग पुरस्कार दिए जाएंगे

उम्र समूह-६ से ११ वर्ष:

Grand National Prize Chic Modithread Scholarship worth Rs. 1000/- and "Needlework Young Princess 1979 Trophy" plus a Childcare hamper of dresses, toys and nursery furniture worth Rs. 1000/-.

Ten 1st Prizes Childcare hampers of dresses, toys and nursery furniture. Each hamper worth Rs. 500/-.

Ten 2nd Prizes Sets of dresses from chic Creations. Each set worth Rs. 200/-.

Ten 3rd Prizes Each worth Rs. 100/-. Gift hampers of Johnson's* Baby Powder, Johnson's* baby soap and Johnson's* baby cream. *Trade Mark

100 Merit Prizes Sets of Children's books from U.S.S.R. Book Centre and Lok Vangmaya Griha (Pvt.) Ltd., Bombay. Each set worth Rs. 20/-.

100 Consolation Prizes S.N.P. FUN-N-COLOUR Painting Kits worth Rs. 17/- each.

उम्र समूह-१२ से १६ वर्ष:

Grand National Prize Chic Modithread Scholarship worth Rs. 1000/- and "Needlework Princess 1979 Trophy" plus a gift cheque from Childcare worth Rs. 1000/-.

Ten 1st Prizes Gift cheques from Childcare Each worth Rs. 500/-.

Ten 2nd Prizes Sets of dresses from chic Creations. Each set worth Rs. 200/-.

Ten 3rd Prizes Each worth Rs. 100/-. Gift hampers of Johnson's* Baby Powder, Johnson's* Complexion Cream and Carefree* Sanitary Napkins. *Trade Mark

100 Merit Prizes Sets of books from U.S.S.R. Book Centre and Lok Vangmaya Griha (Pvt.) Ltd., Bombay. Each set worth Rs. 20/-.

100 Consolation Prizes Chic Needlework Kits worth Rs. 17/- each.

First 500 entries in each of the ten territories will receive a Duraflex Plastic book jacket

शिक शैल पढ़ें – शिक पत्रिका में बच्चों का विशेष भाग! प्रतियोगिता की पूरी जानकारी के लिए लिखें: Chic Publications, Akash Ganga, 89, Bhulabhai Desai Road, Bombay 400036.

जल्दी कीजिए! प्रतियोगिता की अन्तिम तिथि ३१ अगस्त '७९ अपनी प्रविष्टि अपने क्षेत्र के मोदीथ्रेड डिपो में भेजें। पते की जानकारी के लिए नियम व शर्तें पढ़ें।

लूटो जेम्स का मज़ा
जीतने के लिए, १००१ मज़ेदार पुरस्कार!
खाली जगह की संख्या बताओ!
1
5
2
6
2
6
4
8
4
7
7
?
जल्दी करो!
प्रवेश-पत्र पहुँचने की अंतिम तिथि : 8-6-1979
अपना उत्तर, कॅडबरिज़ जेम्स के एक बड़े खाली प्लास्टिक पैकेट (३० ग्राम) के साथ भेजो। पहले १००१ सफल प्रतियोगियों को ११ रुपये मूल्य का स्टेट बैंक गिफ्ट चेक मिलेगा।
अपना उत्तर, नाम और पते के साथ केवल अंग्रेजी में और बड़े (ब्लॉक) अक्षरों में लिखो।
Cadbury's GEMS
प्रवेश-पत्र इस पते पर भेजो :
"Fun with Gems", Dept. No. B-8
Post Box No. 56,
Thane 400 601, Maharashtra.
चॉकलेट से भरे रंगीन कॅडबरिज़ जेम्स
CHAITRA-C-263 HIN
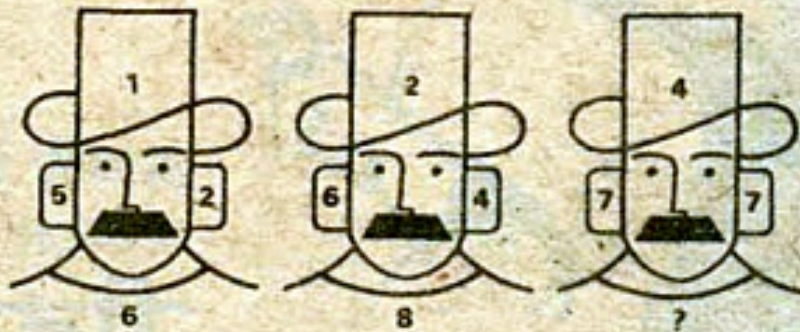
आपके बालों को जरूरत है रीटा द्वारा देखभाल की

रीटा बालों को सवारने का एक उत्तम साधन है, जो बहुत ही गाढ़ा और मोहक सुगंधवाला है। इससे बाल नैसर्गिक रूप से घने बढ़ते हैं और यह दिमाग को ठंडक पहुंचाता है। 'रीटा' स्त्री व पुरुष दोनों के लिए श्रेष्ठ तेल है।

रीटा

रीटा से बाल सुंदर बढ़ते हैं। एक शीशी आज ही खरीदिये। हर जगह मिलता है।

वेटो कंपनी, बम्बई • कलकत्ता • मद्रास

Sona 31 HI

सबसे दिलचस्प शौक़ फ़ोटोग्राफ़ी को अब लिबर्टी कैमरा ने कितना सरल, कितना कम ख़र्च बना दिया है...!

नये शौक़ीन हों या कैमरा विशेषज्ञ, स्माइली और लूना कैमरा से फ़ोटोग्राफ़ी का मज़ा तो आता है ही, इनसे फ़ोटो खींचना बड़ा सरल है। ख़र्च भी कम आता है।

- नये शौक़ीनों के लिए आदर्श
- चलाने में आसान
- देखने में आकर्षक
- १२७ रॉल फ़िल्म पर ४ सें.मी.× ४ सें.मी. की १२ तस्वीरें लेता है।

लूना

- फ़ोटोग्राफ़ी का असली मज़ा लेने के लिए
- १२० रॉल फ़िल्म पर ६ सें.मी. × ६ सें.मी. की १२ तस्वीरें खींचता हैं।
- इलेक्ट्रॉनिक फ़्लैशगन भी इस्तेमाल कर सकते हैं।

उत्पादक:
फ़ोटो इंडिया
९७, सरदार पटेल रोड, सिकन्दराबाद, ५०० ००३

maa HFI/34/78 Hin

Hooray
for Asoka Glucose
milk Biscuits!
ASOKA
GLUCOSE
Asoka
Glucose
MILK BISCUITS
Asoka
ANY
TIME IS
ASOKA
TIME
Unwrap a new kind of freshness.
Have the time of your life.
Enjoy crisp, ASOKA GLUCOSE MILK BISCUITS
Hygienically made in modern,
German, electrically controlled plant.
Delicious and Fresh.
Energy-packed.
Buy a pack for your family today!
BREEZE
Asoka Biscuits Hyderabad, A.P.
Manufacturers of Asoka Craspo and Craspocrack.

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

इस मास की बेताल कथा "सैनिक का बर्ताव" है। इस कहानी के द्वारा यह बात विदित होती है कि इस संसार के सभी लोग स्वार्थ से प्रेरित होकर ही सभी काम करते हैं, लेकिन अपने पेशे के धर्म के अनुरूप स्वार्थ होता है, जैसे व्यापारी का स्वार्थ अलग है और सैनिक का स्वार्थ भिन्न होता है।

अमर वाणी

सहस्त्रा प्यपि मूर्खाणां
य द्युपास्ते महीपतिः
अथवा प्ययुतान्येव
नास्ति तेषु सहायता ॥

[राजा चाहे जितने भी हज़ार मूर्खों को प्राप्त करें, उनके द्वारा कोई भी प्रयोजन सिद्ध न होगा।]

वर्ष : ३१ मई १९७९ अंक : ९

एक प्रति : १-२५ :: वार्षिक चन्दा : १५-००

वै. हेमसुंदराव, डोर्नकल (आंध्र)

प्रश्न: कहा जाता है कि अर्द्ध रात्रि के वक़्त नार्वे देश में सूर्य का प्रकाश होता है, वहाँ पर अर्द्ध रात्रि के वक़्त सूर्य के होने का कारण क्या है?

उत्तर: पृथ्वी के द्वारा सूर्य की परिक्रमा करनेवाला एक ग्रह मार्ग है, उसके चतुर्दिक घूमनेवाली "धुरी" उस मार्ग के ढलाऊ दिशा में है। इस कारण हम यह जान पाते हैं कि पृथ्वी के द्वारा एक बार सूर्य की परिक्रमा करनेवाले १२ महीनों की अवधि में छे मास सूर्य उत्तरी दिशा में होते हैं और बाक़ी छे महीने दक्षिणी दिशा में। उस काल को हम उत्तरायण और दक्षिणायण कहते हैं। सूर्य जब पूर्ण रूप से उत्तरी दिशा में जाते हैं, तब उत्तरी ध्रुव प्रदेश के चतुर्दिक के प्रांत में सूर्यास्त नहीं होता। साथ ही उत्तर ध्रुव मण्डल के समीप में स्थित देशों में कुछ दिन तक "अर्द्ध रात्रि" में भी सूर्यास्त नहीं होता। कुछ प्रदेशों में रात का समय थोड़े ही घंटों का होता है। नार्वे से भी अधिक ग्रीनलैण्ड जैसे उत्तरी ध्रुव के समीप के और अनेक देश हैं।

के. जी. सरळाकुमारी, के. जी. हेमलता, कुप्पं (आन्ध्र)

प्रश्न: वार्तालाप के लिए भाषा प्रमुख स्थान रखती है। भाषा का जन्म कब और कैसे हुआ? किसने इसका प्रचार किया? इतनी भाषाओं की उत्पत्ति कैसे हुई?

उत्तर: भाषा सब प्रकार की वस्तुओं, कार्यों और भावों का संकेत है। ध्वनियाँ करनेवाले जानवर भी कुछ ध्वनियों के द्वारा अपनी जाति को अपने भाव प्रकट करते हैं। विपत्ति में फंसा हुआ कौआ एक प्रकार की ध्वनि करके सैंकड़ों कौओं को बुला सकता है। मानवों के बीच भावों के फैलने के साथ भाषा का भी विकास होता है। जंगली जातियों की भाषाओं में बहुत ही कम शब्द होते हैं। उदाहरण के लिए सवर भाषा (बोली) के शब्दों को संकेतों के रूप में ग्रहण करने के बाद उन्हें समझनेवाले लोग स्वभावत: उस भाषा के जानकार माने जाते हैं। हम जो भाषा नहीं जानते, उस भाषा में "साँप" चिल्लाकर हमें चेतावनी भी दे तो भी हम उसका भाव समझ न पायेंगे। इसी प्रकार भिन्न प्रकार के समाजों ने भिन्न प्रकार की भाषाओं की सृष्टि की है। उन भाषाओं का ज्ञान अन्य लोग उनके संपर्क द्वारा ही प्राप्त करते हैं।
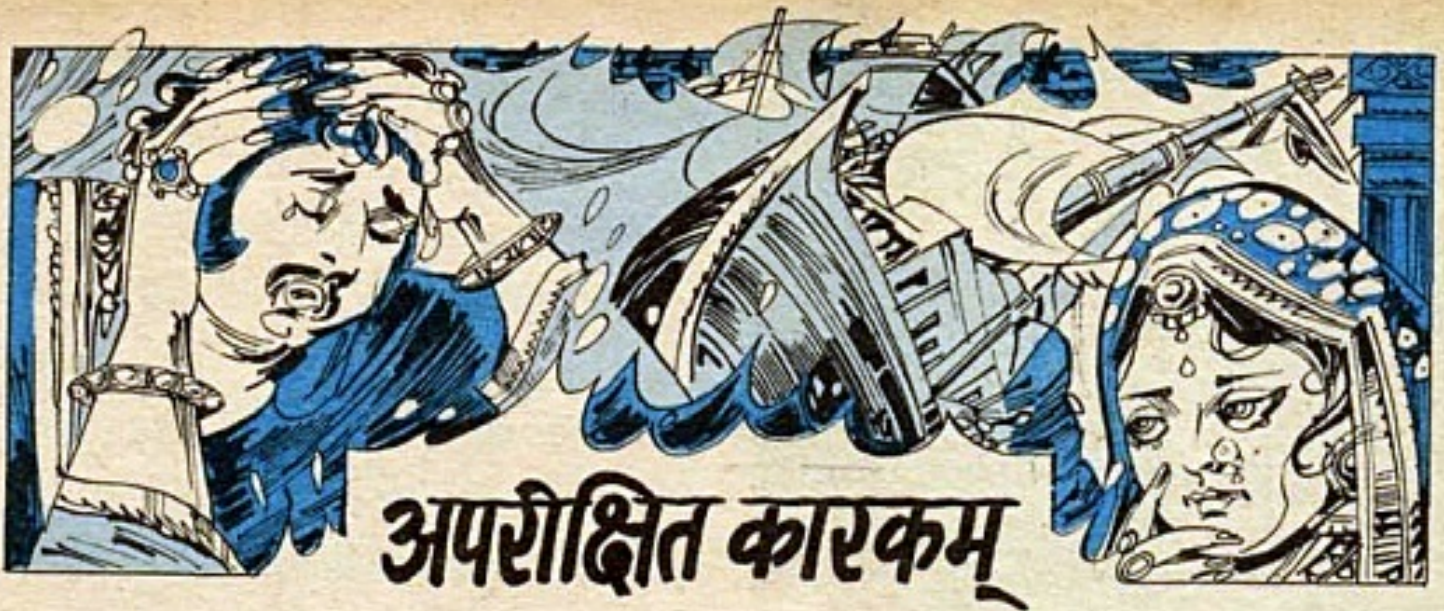
अपरीक्षित कारकम्

[७०]

"किसी को भी आगा-पीछा सोचे बिना जल्दबाजी में आकर कोई काम करके बाद को पछताना नहीं चाहिए। सब लोग 'नाई और मुनि' नामक कहानी से सबक़ सीख सकते हैं।" विष्णुशर्मा ने समझाया।

"वह कैसी कहानी है?" राजकुमारों के पूछने पर विष्णुशर्मा ने यों बताया :

पाटलीपुत्र नामक नगर में मणिभद्र नामक एक बड़ा व्यापारी रहा करता था। वह दान-धर्म, धार्मिक कार्य और परिवार के खर्च के पीछे लाखों रुपये व्यय किया करता था। कलिंग पट्टणम, कायल, कोर्कै जैसे बंदरगाहों में भारी पैमाने पर उसका व्यापार चलता था। उसकी नौकाएँ बंगाल की खाड़ी को पार कर दूर के टापुओं में भी चली जाती थीं।

एक बार जब मणिभद्र की सारी नौकाएँ बंगाल की खाड़ी में थीं, तब भयंकर तूफान और ज्वार-भाटा आया और मणिभद्र की सारी नौकाएँ डूब गईं। इस पर मणिभद्र का दिवाला निकल गया। वह करोड़पति से भिखारी बन बैठा। तब तक मणिभद्र की कृपा के पात्र बने धनवानों ने उसके कुशल-क्षेम तक पूछना छोड़ दिया। उसे दावतों में निमंत्रित करना छोड़ दिया। तिस पर भी उसे और उसकी पत्नी को भी क़दम-क़दम पर अपमानित होना पड़ा। उसका उदार हृदय दुख से भर उठा। क्यों कि वे दोनों वैभवपूर्ण जीवन बिता चुके थे, इस कारण गरीबी उन्हें खलने लगी। वह स्वयं तक़लीफ़ों को सहन कर सकता था, लेकिन उसकी पत्नी को यातनाएँ झेलते देख वह

सहन न कर पाया। इसके पहले वह अत्यंत क़ीमती रेशमी वस्त्र धारण करती थी। प्रति दिन अपार धन दान किया करती थी। सभी ऋतुओं में उसके पास टोकरियाँ भरकर फूल पहुँचाये जाते थे। इस वक़्त वे सारी चीज़ें सपने बन गईं। वह इस तरह दुखी होने लगी जैसे बंधा हुआ हाथी पीड़ा का अनुभव करता है। उल्टे वह अपने पति को ख़ुश करने और अपनी तक़लीफ़ों को छिपाने के जो व्यर्थ प्रयत्न करती थी, वे और भी करुणा जनक थे।

एक दिन रात को मणिभद्र की पत्नी गृहस्थी के किसी काम में एक दम निमग्न थी, तब मणिभद्र टूटी खाट पर लेटे यों सोचने लगा:

"गरीबी निकृष्ट है। सज्जनता, सहन-शीलता, सुशीलता, साधुता और कुलीनता भी एक गरीब में शोभा नहीं देतीं। मान, दर्प, ज्ञान, बुद्धि, सौंदर्य और विवेक भी गरीबी के साथ नष्ट हो जाते हैं। प्रति दिन अपने पेट भरने की चिंता में बुद्धिमान की बुद्धिमत्ता भी निरुपयोगी हो जाती है। एक धनवान के निकट एक हज़ार गरीब हो सकते हैं, मगर दुनिया को धनवान का ही पता चलता है, गरीबों का कहीं अस्तित्व ही नहीं होता। दुनिया को केवल धन से मतलब है। गरीब का कोई कार्य जहाँ अपराध होता है, वही कार्य धनवान के लिए अपराध नहीं होता। इस जन्म के द्वारा मेरे लिए प्रयोजन ही क्या है? मैं कल दूर के किसी जंगल में जाकर फांसी लगाकर आत्महत्या कर लूँगा। मेरी लाश को देख दुखी होने का मौक़ा मेरी प्रिय पत्नी को न मिलेगा। वह यही सोचेगी कि मैं धन कमाने के लिए किसी दूसरे देश में चला गया हूँ। इस प्रकार उसे वैधव्य का दुख प्राप्त न होगा। वह अपने मायके जाकर सुख पूर्वक अपने शेष दिन बिता सकती है। मेरे रहते वह मुझे छोड़कर अपने मायके

नहीं जायेगी। मेरे न रहने से उसे जाना ही पड़ेगा।"

यों विचार करके मणिभद्र सो गया। उस रात को उसने एक सपना देखा। सपने में एक दिगंबर जैन मुनि ने दर्शन देकर कहा–"मणिभद्र! आत्महत्या का प्रयत्न मत करो। पिछले जन्म के कार्य कभी कभी असफल-से दिखाई देते हैं, मगर उनकी सफलता निश्चित है। पिछले जन्म में एक दिगंबर जैन मुनि ने गरीबों में दान बांटने के ख्याल से तुमसे याचना की, इस पर तुमने उन्हें एक लाख स्वर्ण मुद्राएँ दे दीं; मैं ही वह मुनि हूँ। तुम से मैंने जो सोना पाया, उसके कारण मैं लोभ में पड़ गया, उस धन को मैंने गरीबों में नहीं बांटा, साथ ही पहले की भांति ईश्वर का ध्यान नहीं किया और सोने को देख मैं खुश होने लगा। कहा जाता है कि हमारा मन जिस वस्तु पर रम जाता है, हम वही बन जाते हैं, यह बात पूर्णतया सत्य है। मैं वैसे बाहर से देखने में मुनि जैसे दिखाई देता हूँ, लेकिन मैं वास्तव में सोने का गुलाम हो गया हूँ। अब मेरी आँखें खुल गई हैं। सोने के प्रति मेरे मन में थोड़ा भी मोह नहीं है। फिर भी सोने का गुलाम बना वह मानव मुझे छोड़ नहीं पा रहा है। अब उसका अंत होना

है और तुम्हारा सोना तुम्हें प्राप्त होना चाहिए। इसलिए मैं कल सवेरे इसी रूप में तुम्हारे घर आ जाता हूँ। तुम मुझे बड़ी आसानी से पहचान सकते हो। क्यों कि मेरे हाथ में भिक्षा पात्र न होगी। मैं 'भिक्षां देहि' नहीं कहूँगा। तुम थोड़ा भी संकोच किये बिना मेरे सिर पर लाठी चलाओ। मैं तुरंत दो मन वजनवाली सोने की मूर्ति के रूप में बदल जाऊँगा। तुमने मुझे जो सोना दिया था, उसका वजन बस इतना ही है। उस सोने को पाकर तुम और तुम्हारी पत्नी पहले की भांति आराम से जी सकते हो! साथ ही तुम्हें इधर जो गरीबी प्राप्त हुई, उस

कारण मनुष्यों के स्वभाव तथा दुनिया का वास्तविक ज्ञान प्राप्त कर तुमने अपने विवेक को बढ़ा लिया है। अब मैं पहले की भांति साधारण जैन मुनि बनकर सीधे देवलोक में पहुँच जाऊँगा और निर्विघ्न तपस्या करूँगा।" यों समझाकर वे अदृश्य हो गये।

इसके बाद मणिभद्र झट उठ बैठा, उस विचित्र सपने के बारे में यों सोचा :

"मैं नहीं जानता कि यह सपना सच होगा या नहीं, सोने के पहले मैंने धन के बारे में सोचा, इस कारण शायद यह सपना निरर्थक ही होगा। कहा जाता है कि रोगी, दुखी और नशे में रहनेवाला व्यक्ति जो सपना देखता है, वह सच नहीं होता। फिर भी देखता हूँ कि क्या होनेवाला है?"

इसके बाद मणिभद्र बहुत तड़के ही उठा, स्नान और पूजा समाप्त कर घर के बाहर चबूतरे पर बैठ गया। उसके पास ही एक मोटी लाठी तैयार रखी गई थी।

उस समय एक नाई ने आकर मणिभद्र की पत्नी के पैरों के नाखून काट दिये। वह काम पूरा हो ही रहा था तभी जैन मुनि भिक्षा पात्र के बिना आ पहुँचा। भिक्षा माँगे बिना मणिभद्र की ओर देखते मुस्कुराते हुए आ खड़ा हुआ।

मणिभद्र ने उसे देख जान लिया कि वह मुनि वही है जो उसे सपने में दिखाई दिये हैं। फिर क्या था, पूरी ताक़त लगाकर झट से मुनि के सर पर मणिभद्र ने लाठी दे मारी। जैन मुनि दूसरे ही क्षण नीचे गिर पड़ा और सोने की मूर्ति के रूप में बदल गया। इसे देख मणिभद्र की पत्नी और नाई भी विस्मय में आ गये।

मणिभद्र आनंद बाष्प गिराते अपनी पत्नी की मदद से उस सोने की मूर्ति को घर के भीतर ले आया और उस मूर्ति की एक छोटी-सी उंगली काटकर नाई के हाथ देकर बोला–"सुनो भाई, इससे तुम अपना मनोरंजन करो, पर यह बात तुम किसी से मत कहो।"
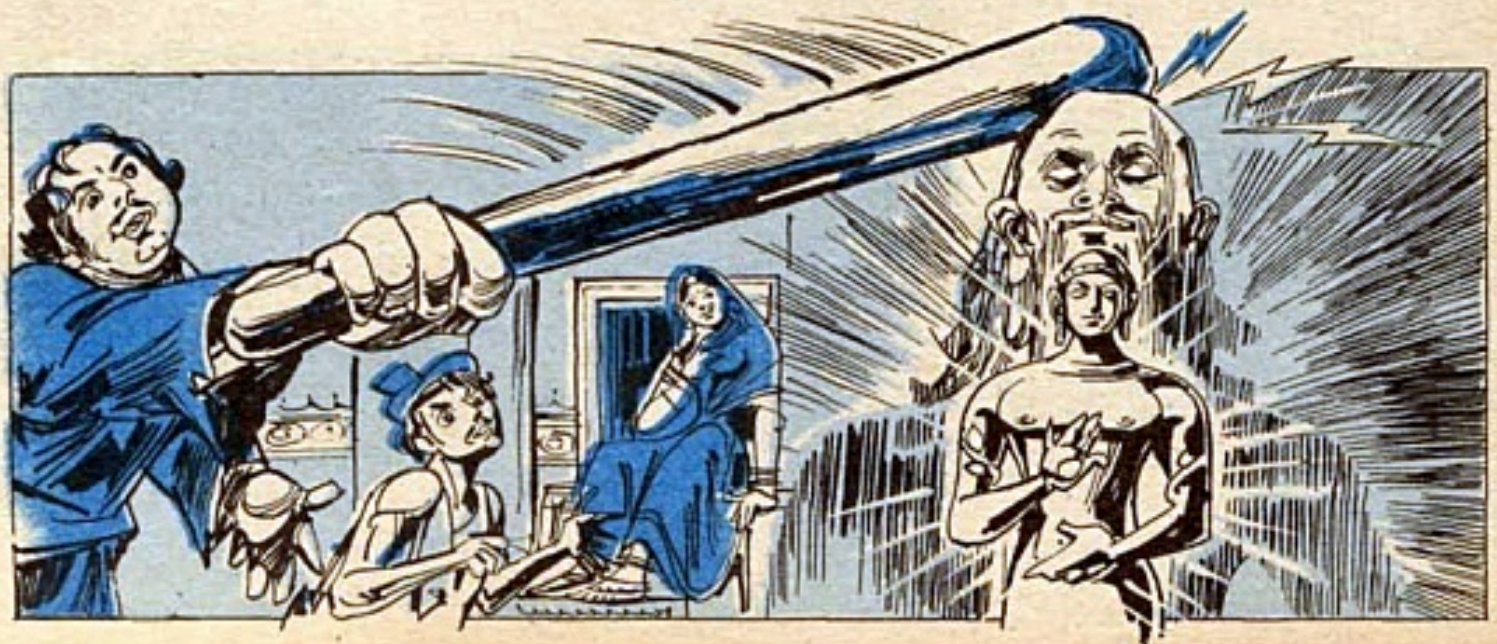
भल्लूक मांत्रिक

[१०]

[बधिक भल्लूक के द्वारा राजा दुर्मुख का सर काटने से उग्रदण्ड ने उसकी रक्षा की और दुर्मुख को मांत्रिक के पास ले जाने की जिम्मेदारी अपने ऊपर ली। जंगली शिकारी भी बधिक भल्लूक के साथ चन्द्रशिला नगर जाने को तैयार हो गया। बधिक भल्लूक को हाथियों पर आये चार आगंतुकों ने रोका और उस पर तीर चलाने लगे। इसके बाद...]

बधिक भल्लूक अपने ऊपर गिरनेवाले बाणों को परसु से रोक उन्हें दूर हटाने लगा। तब सूंड कटे अपने वाहन हाथी को उन सैनिकों पर उकसाया। दोनों हाथियों का सामना हुआ। भयंकर रूप से घींकार करते दोनों हाथी दांतों से लड़ने लगे। उस वक़्त बधिक भल्लूक ने "जय! सिरस भैरव की!" चिल्लाकर अपने परसु को दुश्मन के हाथी पर फेंका। उसके प्रहार से हाथी का एक दांत केले के पौधे की भांति टूटकर दूर जा गिरा। इस भगदड़ में जंगली शिकारी हाथी पर से फिसलकर नीचे जा गिरा।

दांत टूटा हुआ हाथी भल्लूक के हाथी के प्रहार से घबराकर भाग गया। तब दूसरे हाथी पर सवार हुए सैनिक जान के डर से चीख उठे—"हमने सोचा था कि हाथी पर सवार व्यक्ति भाल्लूक का वेषधारी

कोई मजाकिया है, मगर ऐसा लगता है कि यह तो युद्ध विद्याएँ जाननेवाला कोई सच्चा भालू है।" यों कहते अपने हाथी को हांककर वे पीछे की ओर मुड़े।

बधिक भल्लूक ने अपने अंग रक्षक बने जंगली शिकारी की ओर एक बार नज़र दौड़ाई, जो हाथी पर से नीचे गिरकर बेहोशी की हालत में था, तब अपने वाहन को तेजी के साथ आगे की ओर दौड़ाया। भागनेवाले दोनों हाथियों को रोककर कहा–"अबे, मैं तो सच्चा भालू नहीं हूँ! अपराधियों के सर काटनेवाले पेशेवर बधिक भल्लूक हूँ! यदि थोड़ी देर तक ही सही, तुम लोग अपने प्राण बचाये रखना चाहते हो, तो भागने की कोशिश मत करो। मेरे सवालों के जवाब दो।"

ये शब्द सुनकर सैनिक बधिक भल्लूक की आकृति के साथ उसकी भीकर कंठ ध्वनि भी सुनकर थर-थर कांप उठे।

इसके बाद बधिक भल्लूक ने अपने सूंड कटे हाथी को दुश्मन के हाथियों के चारों तरफ़ दो बार परिक्रमा कराई। अपने परसु को एक हाथी के सर पर टिकाया, तब उन सैनिकों से पूछा–"अबे, अब सच्ची बात बताओ! तुम लोग कौन हो? तुम लोगों ने 'दुर्मुख महाराजा की जय' के नारे लगाये, उस राजा का सर तो मुझे गिरवी रखा गया है। तुम लोग जिस दुर्मुख राजा की बात करते हो, वह राज्य करनेवाला राजा न होकर किसी खेत में काम करके अपना पेट पालनेवाला उसी नाम का किसान तो नहीं है?"

इसके उत्तर में शत्रु सैनिकों में से एक ने अपना सिर झुकाकर बधिक भल्लूक को प्रणाम किया, तब कहा–"भल्लूक महाराज, हमने जिस राजा के जयकार किये, वे तो उदयगिरि के राजा दुर्मुख हैं। हमें मालूम हुआ है कि उन्हें एक हाथी के वाहनवाले व्यक्ति ने इस जंगल में बन्दी बनाया है। इसीलिए हम उन्हें छुड़ाने के वास्ते उनकी खोज में आये हुए हैं।"

यह जवाब सुनकर बधिक भल्लूक अचरज में आ गया और बोला–"तुम लोग जिस महाराजा की बात करते हो, उन्हें शत्रुओं से बचाने के लिए सिर्फ़ चार सैनिक ही इस महारण्य में पहुँच गये हो?"

ये बातें सुनने पर चारों सैनिकों के चेहरे पीले पड़ गये और वे एक दूसरे का चेहरा देखने लगे। बधिक भल्लूक ने इस बार अपने परसु को दांत कटे हाथी के सर पर टिकाकर धमकी दी–"अबे, तुम लोग सच न बताओगे तो इस हाथी के कुंभस्थल को अपने परसु से चीर डालूँगा। इसके बाद तुम चारों के सरों का भी यही हाल होगा।"

इसके जवाब में एक ने कहा–"भल्लूक महाराज! दुर्मुख राजा के दुर्ग पर सूर्यभूपति नामक एक सामंत राजा ने क़ब्ज़ा कर लिया है। उस वक़्त जो लड़ाई हुई, उसमें बचकर हम चारों अपने राजा को खोजते इस जंगल में आये हैं।"

"अबे, तुम्हारी राज भक्ति तारीफ़ के क़ाबिल है, लेकिन तुम लोगों ने जिस राजा के वास्ते ये सारी तक़लीफ़ें झेलीं, वह राजा दुर्मुख चन्द्रशिला नगर पर अधिकार करने चल पड़ा और रास्ते में एक महान मांत्रिक और कालीवर्मा नामक एक महान वीर का अपमान करके आफ़त

में फंस गया है। प्राणों के साथ उसका उदयगिरि पहुँचना ना मुमकिन है। तुम लोग और किसी राजा के दरबार में नौकरी कर लो।" भल्लूक ने समझाया।

सैनिकों की समझ में ये बातें नहीं आईं, वे अचरज में आकर भल्लूक का चेहरा ताकते रह गये। तभी राजा दुर्मुख का अंग रक्षक वहाँ पर दौड़ता आया, बोला–"बधिक भल्लूक प्रभू! आप के पीछे चलते हमने हाथियों के घींकार सुनकर यही सोचा कि आप के सूंड कटे हाथी को कहीं जंगली हाथियों ने रोक तो नहीं लिया है।" यों कहते जमीन पर औंधे मुँह गिरे जंगली शिकारी को देख अपनी

की ओर निशाना साधकर गरज उठा—"भल्लूक साहब को रोकनेवाले कहाँ पर हैं?"

"महाशय अंगरक्षक! हमें बचाओ।" चिल्लाते सैनिक हाथी पर से नीचे कूद पड़े।

अंग रक्षक अचरज में आ गया कि उसे 'अंग रक्षक' कहकर संबोधित करनेवाले ये लोग कौन हैं? फिर सैनिकों की ओर परखकर देखा, उन्हें पहचानते हुए पूछा—"अरे, तुम लोग हो? नगर को छोड़ इस जंगल में क्यों आ गये हो?"

यह सवाल सुनकर बधिक भल्लूक ठठाकर हँस पड़ा, बोला—"यह तो एक बड़ी राम कहानी है। तुम्हारे दुर्मुख राजा के दुर्ग पर किसी सामंत ने क़ब्ज़ा कर लिया है। फिर भी थोड़ी ही देर में अपना सर खोनेवाले के लिए राज्य के होने से फ़ायदा ही क्या है?"

उसी वक़्त वहाँ पर राजा दुर्मुख और उसके पीछे राक्षस उग्रदण्ड तथा जंगली डाकू भी आ पहुँचे। दुर्मुख ने अपने सैनिकों को पहचानकर पूछा—"अरे, तुम लोग हो? इस जंगल में क्यों आये हो?"

सैनिक जवाब देने ही जा रहे थे, बधिक भल्लूक हाथी पर से उतरकर दुर्मुख से बोला—"दुर्मुख! यही सवाल तुम्हारे अंग रक्षक ने भी इन लोगों से किया है। मैं

शंका प्रकट की—"प्रभु! ऐसा लगता है कि आप के जंगली सेवक को हाथियों ने कुचलकर मार डाला है।"

बधिक भल्लूक ने उस जंगली के निकट अपने हाथी को ले जाकर कहा—"मैं नहीं समझता कि यह मर गया है। हाथी पर से यह गिर गया था, इसलिए बेहोश हो गया होगा! इसकी पीठ थप-थपाकर देख तो लो?"

अंग रक्षक जंगली सेवक की पीठ थप-थपाते बोला—"अरे, सुनो! होश में आ जाओ! तुम्हारे मालिक बुला रहे हैं!"

दूसरे ही पल में जंगली सेवक चौंककर उठ बैठा। तीर-कमान हाथ में ले सैनिकों

बताता हूँ, सुनो! तुम्हें विशेष रूप से चिंता करने की कोई बात नहीं है। तुम्हारा दुर्ग किसी सामंत राजा के हाथ में चला गया है।"

"कौन है वह सामंत?" ये शब्द कहते दुर्मुख ने म्यान से तलवार खींची। अपने सैनिकों से बोला—"मेरे तो एक ही सामंत है। वह सूर्य भूपति है। उसी ने मेरे दुर्ग पर क़ब्ज़ा किया होगा। तुम लोग दुर्ग को दूसरे के हाथ सौंपकर यों कायरों की भांति भाग आये हो? इस अपराध में मैं अभी तुम लोगों के सर धड़ से अलग करने जा रहा हूँ।" यों डांटते दुर्मुख सैनिकों पर झपटने को हुआ।

राक्षस उग्रदण्ड ने झट से एक क़दम आगे बढ़ाकर दुर्मुख का हाथ पकड़ा। उसे रोकते हुए बोला—"दुर्मुख! जल्दबाजी न करो। पहले तुम बधिक भल्लूक और मांत्रिक से भी अपना सिर बचाने की कोशिश करो। इसके बाद तुम्हारा दुर्ग वापस दिलाने की हम सब तुम्हें मदद देंगे।"

ये बातें सुन दुर्मुख शांत हो गया। उग्रदण्ड के दोनों हाथ पकड़कर बोला—"महा प्रभू उग्रदण्ड! अगर मेरी मौत निश्चित है, तो मुझे एक राज्य के राजा के रूप में ही मरने दो। तुम्हारी मदद से उस दुष्ट सामंत का सिर दुर्ग के बुर्ज पर लटकाकर तब मैं बड़ी खुशी के साथ अपना सिर कटवाने के लिए उस भल्लूक मांत्रिक के पास चला आऊँगा।"

दुर्मुख का दुख देखने पर राक्षस उग्रदण्ड को उस पर दया आ गई। उसने बधिक भल्लूक के पास जाकर पूछा—"सुनो, बधिक भल्लूक! दुर्मुख के माँगने में कोई दोष नहीं है। क्या वैसा ही करें?"

बधिक भल्लूक दो-चार पल सोचता रहा, तब सबकी ओर दृष्टि दौड़ाकर पूछा—"तुम सब मिलकर आखिर मुझे धोखा तो देना नहीं चाहते हो न?" यों कहते वह अपने परसु के फाल की जांच करने लगा।

उग्रदण्ड ने सोचा कि भल्लूक के क्रोध में आने के पहले ही उसे शांत करना उचित होगा। मुस्कुराते हुए उसके कंधे पर हाथ रखकर बोला–"बधिक भल्लूक! हम सब जानते हैं कि तुम्हारे परसु का फाल कैसे पैनी है! पर यह बताओ कि भल्लूक मांत्रिक ने जो सर लाने को बताया, वह राजा दुर्मुख का है या राज्य खोया हुआ दुर्मुख का?"

बधिक भल्लूक उस सवाल को समझ न पाने की स्थिति में खीझ के साथ सर हिलाकर बोला–"उग्रदण्ड! लगता है कि तुम कुछ अटपटी बातें बताकर मुझे धर्म संकट में डाल रहे हो? मेरा कहना सही है न? जो कुछ बताना चाहते हो, साफ़ क्यों नहीं बता देते?"

"तब तो सुनो! ऐसा लगता है कि दुर्मुख राजा को अपने प्राणों के डर की अपेक्षा अपने राज्य को खोने की चिंता ज्यादा सता रही है। इसलिए उस राजद्रोही सामंत सूर्य भूपति को दुर्ग से भगाकर सामाजिक मर्यादा के अनुरूप यह कहलायेंगे कि उदयगिरि का दुर्ग तो राजा दुर्मख का ही है, तब हम उसे भल्लूक मांत्रिक के पास ले जायेंगे।"

ये बातें सुन राजा दुर्मुख ने अपने दोनों हाथ जोड़कर निवेदन किया–"बधिक भल्लूक प्रभू! मैं कुछ ही घंटों में इस दुनिया को छोड़कर चला जानेवाला हूँ। इसलिए मेरी इस अंतिम कामना की पूर्ति होने दीजिए।"

बधिक भल्लूक ने स्वीकृति सूचक सिर हिलाया। उसी समय जंगली शिकारी ने अपना एक तीर पेड़ के तने पर टक् से मारा दिया और कहा–"भल्लूक राजा! उस सामंत राजा को मेरे बाण का निशाना बनाने दीजिए! जंगल के पक्षियों को मारकर जीनेवाले शिकारियों से उस सामंत ने कर वसूल किया है।"

दूसरे ही क्षण डाकुओं का सरदार नागमल्ल तलवार खींचकर बोला–"वह

सूर्य भूपति बड़ा दुष्ट है। हम लोग अपने प्राणों का मोह छोड़कर जंगल के यात्रियों को लूटकर पेट भरते हैं। हमारी लूट के माल में से आधा भाग वसूल कर लाने के लिए वह सामंत राजा हमारे पास अपने सैनिकों को भेजा करता था! उस दुष्ट की तुलना में ये दुर्मुख राजा धर्मराज जैसे लगते हैं।"

"ओह, ऐसी बात है! तब तो चलो। एक साथ उस सामंत राजा के सर को भी भल्लूक मांत्रिक को भेंट करेंगे। लेकिन यह बताओ, उदयगिरि नगर यहाँ से कितनी दूरी पर है?" बधिक भल्लूक ने जोश में आकर पूछा।

"पगडंडी के रास्ते चलने पर आध घड़ी के अन्दर हम उदयगिरि पहुँच सकते हैं। मैं सब से आगे रहकर रास्ता दिखाता हूँ। बधिक भल्लूक साहब! क्या मुझे सूंड कटे हाथी पर सवार होने की अनुमति देंगे?" जंगली शिकारी ने पूछा।

बधिक भल्लूक स्वीकृति सूचक सर हिलाकर हाथी पर जा बैठा। राक्षस उग्रदण्ड ने राजा दुर्मुख के कंधे पकड़कर ऊपर उठाया। दांत टूटे हाथी पर उसे बिठाते हुए भल्लूक से बोला—"बधिक भल्लूक! तुम्हारी अनुमति के साथ मैं इस दुर्मुख राजा को हाथी पर बिठा रहा हूँ। थोड़े समय के लिए भी सही राजा बननेवाले दुर्मुख की इज्जत करना बहुत जरूरी है न?"
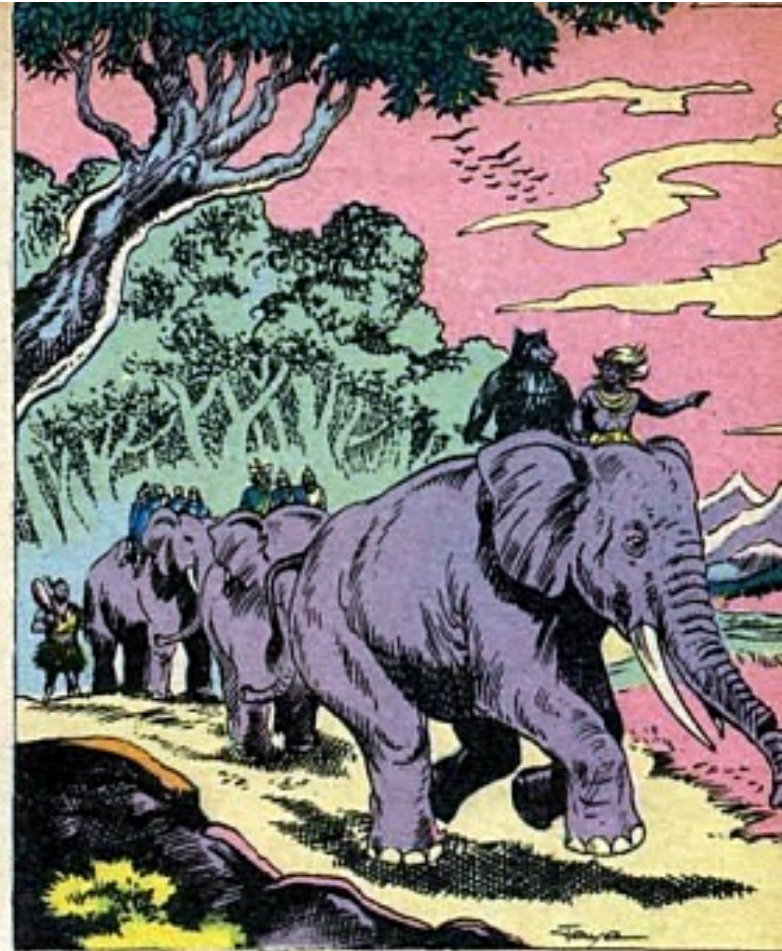
राजा दुर्मुख के साथ दो और सैनिक एक हाथी पर बैठे और डाकुओं का नेता नागमल्ल, उसके दो अनुचर तथा बाक़ी दो सैनिक दूसरे हाथी पर सवार हुए। जंगली शिकारी रास्ता दिखा रहा था, तब सभी लोग उदयगिरि की ओर चल पड़े। राक्षस उग्रदण्ड पत्थरवाले अपने गदे को कंधे पर रखकर बड़े-बड़े डग भरते उनके पीछे चलने लगा।

आध घड़ी के बाद वे सब जंगल को पार कर एक विशाल मैदान में पहुँचे।

सामने एक बड़ा दुर्ग और उसके पीछे महल और मकानोंवाला एक नगर उन्हें दिखाई दिया। दुर्ग को देखते ही राजा दुर्मुख चिंतापूर्ण चेहरा बनाकर बधिक भल्लूक से बोला–"भल्लूक प्रभू! इस वक़्त उस दुष्ट सामंत के पास थोड़ी-बहुत घुड़ सेना और पैदल सेना ज़रूर होगी। उतनी भारी सेना का हम मुट्ठी भर लोग क्या सामना कर सकते हैं?"

"ओहो! इस वक़्त तुम्हारे मन में यह संदेह पैदा हो रहा है?" ये शब्द कहते बधिक भल्लूक ने अपना परसु उठाया, पीछे चलनेवाले उग्रदण्ड को पुकारकर दुर्मुख का संदेह उसे सुनाया।

राक्षस उग्रदण्ड अपने गदे को जमीन पर पटककर बोला–"बधिक भल्लूक! तुम्हारा परसु और मेरा गदा सैंकड़ों शत्रुओं का संहार कर सकते हैं। मगर ज्यादा खून खराबी किये बिना उस दुर्ग पर कब्ज़ा करनेवाले सामंत को पकड़कर उसका सिर काटने का कोई उपाय हो तो सोच लो।"

उग्रदण्ड की बात पूरी होने के पहले ही नागमल्ल हाथी पर उठ खड़े होकर बोला– "प्रभू! मैंने इसके पहले ही ऐसा उपाय सोच रखा है। मैं और मेरे दो अनुचर पहले उदयगिरि में प्रवेश करके उस सामंत राजा से बतायेंगे कि हम राजा दुर्मुख को बन्दी बनाकर ले आ रहे हैं। इसके बदले में हमें कौन सा पुरस्कार देंगे? तब वही अपने थोड़े अंग रक्षकों के साथ शायद हमारे पास आ सकता है।"

"ओह! तुमने बड़ा अच्छा उपाय सोच रखा है नागमल्ल! हूँ, तब तो इसी वक़्त चले जाओ।" उग्रदण्ड ने आदेश दिया।

डाकुओं का सरदार नागमल्ल और उसके अनुचर हाथी को दौड़ाते हुए दुर्ग की ओर थोड़ी दूर बढ़े ही थे, तभी हठात् दुर्ग का द्वार भारी आवाज़ के साथ खुल गया और भीतर से ठिड्डियों के दल की भांति कई घुड़ सवार और पैदल सैनिक बाहर आ निकले।

(और है)

सैनिक का बर्ताव

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट गया। पेड़ पर से शव उतार कर कंधे पर डाल सदा की भांति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजन, अगर आप इस प्रकार किसी अपने मित्र के वास्ते श्रम उठाते हैं तो समझ लीजिए कि मित्रों की उदारता विश्वास करने योग्य नहीं है। इसके उदाहरण के रूप में मैं आप को कुमारवर्मा के दुष्ट व्यवहार का परिचय कराता हूँ। श्रम को भुलाने के लिए सुनिये।"

बेताल यों सुनाने लगा: कौशांबी नगर में कुमारवर्मा नामक क्षत्रिय युवक रहा करता था। उसने कई देशों में वेतन भोगी सैनिक रूप में काम करके काफ़ी धन कमाया। उस वक़्त उसके मन में अपनी मातृभूमि को देखने की

बेताल कथाएं

इच्छा पैदा हुई। वह इस विचार को लेकर अपने देश की ओर चल पड़ा कि कौशांबी में लौटकर किसी योग्य युवती के साथ विवाह करके सुखपूर्वक शेष जीवन बिता दे।

रास्ते में धनगुप्त नामक व्यापारी के साथ कुमारवर्मा का परिचय हुआ। धनगुप्त भी कौशांबी नगर का निवासी था। वह एक प्रसिद्ध व्यापारी था, करोड़पति था। धनगुप्त के साथ उसका पुत्र नंदगुप्त भी था। नंदगुप्त अपने पिता के साथ पहली बार विदेशों में जाकर व्यापार के मर्म जान चुका था। अपने पुत्र को धनगुप्त कई देशों में ले गया था, फिर भी उसके मन में और देशों में जाने की इच्छा बनी रही, मगर अपने पुत्र के वास्ते वह कौशांबी नगर को लौटना चाहता था। उन्हीं दिनों में कुमारवर्मा का धनगुप्त के साथ परिचय हुआ।

कुमारवर्मा एक कुशल योद्धा था। वह भी कौशांबी नगर को लौट रहा था। इस कारण धनगुप्त ने अपने पुत्र को थोड़ा-सा धन देकर उसे कुमारवर्मा के हाथ सौंप दिया और वह दूसरे देशों में व्यापार करने चल पड़ा।

कुमारवर्मा के साथ नंदगुप्त भी कौशांबी की ओर चल पड़ा। रास्ते में एक शहर आ पड़ा। उस प्रदेश में हीरों की खानें थीं। इस कारण वहाँ हीरे सस्ते थे। नंदगुप्त ने सोचा कि वहाँ पर हीरे सस्ते में ख़रीद कर कौशांबी में अच्छी क़ीमत पर बेच सकते हैं। इस ख्याल से कुमारवर्मा को साथ ले नंदगुप्त हीरों के व्यापारियों के पास पहुँचा और सौदा किया।

नंदगुप्त को अपने पिता से जो धन मिला था, उससे वह सिर्फ़ चार ही हीरे ख़रीद पाया। इस पर उसने दुखी होकर कुमारवर्मा से कहा–"उफ़! अगर मैंने अपने पिता से और ज्यादा धन लिया होता तो इससे भी अधिक हीरे खरीदकर और नफ़ा उठा सकता था। मुझ से कैसी भूल हो गई!"

"दोस्त! मेरे पास धन है। तुम चाहो तो ले लो। कौशांबी के पहुँचने तक मुझे तो इस धन की कोई ज़रूरत भी नहीं है। यह धन लगाकर तुम हीरे ख़रीद लो। कौशांबी में ये हीरे बेचकर तुम मेरा धन वापस कर दो।" कुमारकर्मा ने बड़ी उदारतापूर्वक सुझाया।

इस पर नंदगुप्त ने कुमारवर्मा के यहाँ से उधार लेकर चार हीरे ख़रीद लिये। तब वे दोनों आगे बढ़े।

कौशांबी के पहुँचने में अभी एक दिन की यात्रा शेष थी। इसके पहले दिन वे एक जंगल में पहुँचे। अपनी पूर्व योजना के अनुसार वे अंधेरा फैलने के पहले जंगल को पार नहीं कर पाये। वह रात उन्हें जंगल में ही बितानी पड़ी।

नंदगुप्त को डर लगने लगा। क्योंकि वह जंगल डाकुओं के लिए बहुत ही मशहूर था। उसके पास तो आठ हीरे थे। अगर डाकू उन्हें लूट लेंगे तो अपने धन के खोने के साथ नाहक़ कुमारवर्मा को उसका उधार भी चुकाना पड़ेगा। कुमारवर्मा के पास तो तलवार है। लेकिन इस बात का क्या भरोसा है कि उसकी भी जान बचाने के लिए वह अपनी जान की परवाह किये बिना डाकुओं से लड़ेगा। उसके पास डाकुओं के द्वारा लूटने के लिए एक

भी कौड़ी नहीं है। अब नंदगुप्त को लगा कि कम से कम ऐसा कोई उपाय करना चाहिए जिससे वह कुमारवर्मा का कर्ज़दार न बने। अगर उसके हीरे उसी के हाथ सौंप दे तो वह उनकी रक्षा करने के लिए ही सही डाकुओं के साथ लड़ सकता है। इस प्रकार वह भी लाभ उठा सकता है।

यों विचार करके नंदगुप्त ने कुमारवर्मा से कहा-"दोस्त! तुम्हारे धन से हीरे खरीद कर उनके द्वारा मैं फ़ायदा उठाऊँ, यह तो मुझे बड़ा ही अन्याय मालूम होता है। ऐसा करने पर मेरी अंतरात्मा मना कर रही है। तुम अपने हीरे ले लो।

कौशांबी में बेचकर उसका नफ़ा तुम्हीं ले लो।" यों कहकर उसने चार हीरे कुमारवर्मा के हाथ दे दिया।"

कुमारवर्मा समझ गया कि नंदगुप्त ने ऐसा क्यों किया है। उसने नंदगुप्त से कहा—"मित्रवर! इन हीरों के मेरे पास रहने से मुझे भी डाकुओं का भय बना रहेगा। मैं अपनी रक्षा आप कर लूंगा। तुम अपनी रक्षा आप कर लो, लेकिन मैं तुम्हारी रक्षा करने का वादा नहीं कर सकता।" यों कहकर अपने घोड़े पर सवार हो कुमारवर्मा जाने को हुआ।

इस पर नंदगुप्त एकदम डर गया। उसने गिड़गिड़ाकर कुमारवर्मा से कहा कि उसे छोड़कर चला न जावे। कुमारवर्मा ने समझाया—"तब तो मेरी एक शर्त है! मैं तुम्हें कौशांबी तक सुरक्षित पहुंचाने की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेता हूं। इसके बदले में तुम अपने हीरों में से दो मुझे दे दो।"

नंदगुप्त ने कुमारवर्मा की शर्त मान ली। वह रात आराम से कट गई। दूसरे दिन सवरे ही रवाना हो शाम तक वे दोनों कौशांबी पहुंचे। नंदगुप्त ने अपने चार हीरों में से दो कुमारवर्मा को दे दिये।

बेताल ने यहां तक कहानी सुनाकर कहा—"राजन, कुमारवर्मा के इस दुष्ट व्यवहार को क्या कहे? हो सकता है कि नंदगुप्त स्वार्थी है। लेकिन यह स्वार्थ एक व्यापारी के लिए सहज है। उसने कुमारवर्मा के प्रति कोई धोखा देना नहीं चाहा। उसके धन से नंदगुप्त ने जो हीरे खरीदे, उन्हें कुमारवर्मा को लौटाकर उसकी जिम्मेदारी से वह मुक्त हुआ। अगर कुमारवर्मा के पास धन होता तो उसे डाकुओं का जो भय बना रहता, हीरों के रहने से उससे अधिक भय नहीं हो सकता। इसलिए नंदगुप्त के व्यवहार में दोष ढूंढ़ा नहीं जा सकता। पर कुमारवर्मा की बात ऐसी नहीं है। उसने

तो नंदगुप्त की रक्षा करने की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेकर उसके दो हीरे हड़प लिये। क्या यह अनुचित नहीं है? हीरे खरीदने के लिए कुमारवर्मा ने नंदगुप्त को धन देने की जो उदारता दिखाई, यह कपटपूर्ण नहीं है? इस संदेह का समाधान जानते हुए भी न देंगे तो आपका सिर टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा।"

इस पर विक्रमार्क ने कहा—"इसमें नंदगुप्त की तारीफ़ करने या कुमारवर्मा को दोष देने की कोई बात नहीं है। दोनों ने अपने अपने पेशे के धर्म का अवलंबन किया है। कुमारवर्मा के द्वारा नंदगुप्त को अपना धन उधार देने में कोई उदारता नहीं है। कम दाम में खरीद कर ज्यादा दाम पर बेचना कुमारवर्मा का पोशेगत धर्म नहीं है। उसने साफ़ बतला भी दिया था कि कौशांबी के पहुँचने तक उसे धन की ज़रूरत नहीं है। लेकिन नंदगुप्त ने कुमारवर्मा के पास जो धन उधार में लिया था, उसे हीरों के रूप में लौटा कर फ़ायदा उठाने की बात करना उचित नहीं है। अगर कुमारवर्मा ऐसा लाभ उठाना चाहता तो नंदगुप्त के साथ उसने भी चार हीरे खरीद लिये होते! इसीलिए नंदगुप्त का व्यवहार कुमारवर्मा को बुरा लगा। उसने नंदगुप्त को सुरक्षित घर पहुँचाने का पुरस्कार माँगा तो वह उसका पेशेगत धर्म है। क्योंकि उसने जो कुछ धन कमाया, इसी रूप में कमाया है। कुमारवर्मा नंदगुप्त की रक्षा करने की शक्ति रखता था, फिर भी नंदगुप्त का यह सोचना कि वह उसकी रक्षा नहीं करेगा, उसकी संकुचित मनोवृत्ति प्रकट करता है। यह गुण उसके पेशे के कारण पैदा हुआ है। व्यापारी का दृष्टिकोण यही होता है कि कोई भी व्यक्ति अपने स्वार्थ की बात सोचे बिना दूसरे की सहायता नहीं करता।"

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)
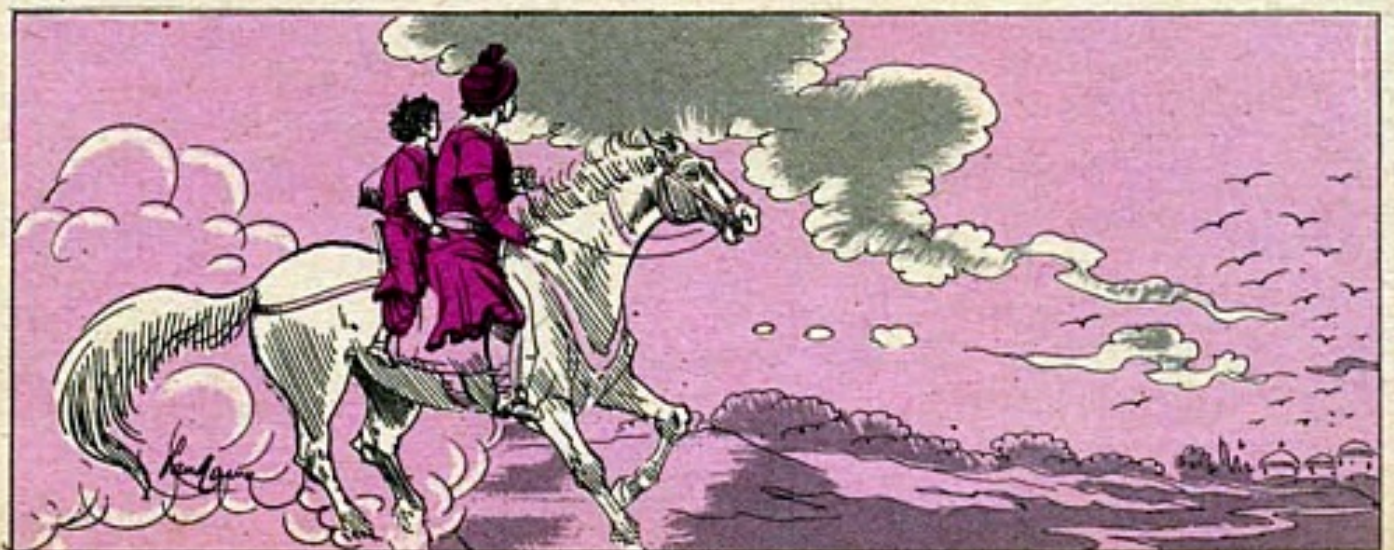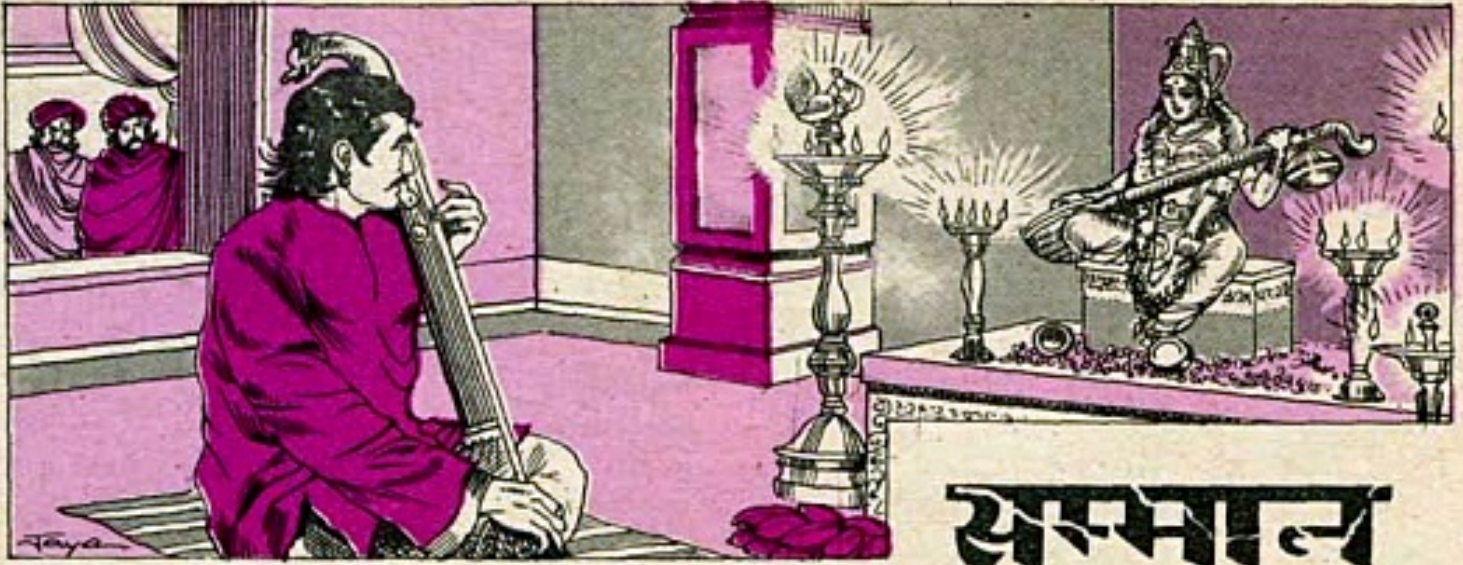
सम्मान

पांचाल देश पर एक बार अचानक दो विपत्तियाँ आ पड़ीं। एक तो पड़ोसी देश के साथ युद्ध हुआ, पर आखिर समझौता हुआ। मगर उसके पीछे लगभग खज़ाना खाली हो गया। उस हालत में वर्षा न होने की वज़ह से अकाल भी पड़ा।

पांचाल देश के राजा सुधीर की समझ में न आया कि क्या उपाय किया जाय? कुछ लोगों ने सुझाया कि आप होम और यज्ञ कीजिए। लेकिन खज़ाने में धन कम था, इसलिए राजा को यह सलाह जंची नहीं। एक और दरबारी ने सलाह दी— "राजन, हमारे देश में एक वैणिक हैं। उनका नाम दीपक है। वे वीणा पर दीपक का राग आलपते हैं तो दीपक अपने आप जल उठते हैं। ऐसे शक्तिशाली संगीत के विद्वान अगर मेघ मल्हार राग का आलाप करें तो शायद बरसा हो जाय।"

यह बात सुनने पर राजा को आश्चर्य हुआ। ऐसे विद्वान की परीक्षा लेने का राजा ने निश्चय किया। राजा और मंत्री उसी दिन रात को अपने वेष बदलकर दीपक के गाँव चल पड़े। दूसरे दिन वे दीपक के घर पहुँचे। उस वक़्त दीपक सरस्वती देवी के सामने बैठकर वीणा पर दीपक का राग आलाप कर रहे थे। थोड़ी ही देर में सरस्वती की प्रतिमा के सामने दीप जल उठे।

उस दृश्य को देख राजा और मंत्री चकित रह गये। दीपक ने अपनी पूजा समाप्त कर राजा की ओर देखा और पूछा— "महाराज! आप मुझसे क्या चाहते हैं?"

राजा ने आश्चर्य में आकर पूछा— "गायक! आप ने मुझे कैसे पहचान लिया?"

"मैंने आप को इसके पहले ही देखा है। मुझसे यदि कोई काम होता तो आप

सुमित्रा नारंग

खबर कर देते, मैं ही खुद आप की सेवा में हाज़िर हो जाता।" दीपक ने कहा।

"गायक! आप अपनी प्रतिभा देश के वास्ते काम में क्यों नहीं लाते?"

"महाराज! किस रूप में करूँ?" दीपक ने पूछा।

"अगर आप दीपक राग का आलाप करके दीप जलाते हैं तो मेघ मल्हार राग का आलाप करके वर्षा क्यों नहीं कराते? देश में पानी का अकाल जो पड़ गया है?" राजा ने पूछा।

दीपक ने अचरज में आकर कहा– "महाराज! क्या यह काम मेरे द्वारा हो सकता है? मैंने मेघ मल्हार राग गाकर कभी वर्षा कराने का प्रयत्न नहीं किया है।"

"अब क्यों नहीं करते?" राजा ने फिर पूछा। इस पर दीपक ने एक हफ़्ते की अवधि माँगी और राजा तथा मंत्री को भेज दिया। इसके बाद दीपक ने एक हफ़्ते तक सरस्वती देवी की आराधना की। अंतिम दिन बीणा लेकर नज़दीक के पहाड़ पर चले गये।

दीपक एक चोटी पर बैठकर वीणा पर मेघ मल्हार का आलाप करने लगे। आश्चर्य की बात थी कि थोड़ी ही देर में चारों ओर से मेघ उमड़-घुमड़कर आये, देखते-देखते मूसलधार वर्षा होने लगी।

सूखे हुए तालाब और कुएँ पानी से भर गये।

इसके बाद राजा ने दीपक को दरबार में बुलवाकर भारी पैमाने पर उनका सम्मान करना चाहा, लेकिन दीपक ने सम्मान पाने से इनकार किया और राजा से अनुमति लेकर अपने घर चले गये।

थोड़े दिन और बीत गये। एक दिन किसी दूर के देश से राजा के दरबार में एक वैणिक आये, बोले–"महाराज! मेरा नाम मैनाक है। मैंने सुना है कि आप के देश में दीपक नामक एक वैणिक हैं जो अपनी वीणा का उपयोग संगीत के वास्ते नहीं, बल्कि जादू और मंत्र-तंत्र के लिए

करते हैं। मैं इन जादू और मंत्र-तंत्रों पर बिलकुल विश्वास नहीं करता। मूर्ख लोग तिल को ताड़ बना लेते हैं। मैं आपके दीपक के साथ स्पर्धा करना चाहता हूँ, कृपया मुझे ऐसा मौक़ा दिलाइये।"

राजा ने दीपक के पास खबर भेजी। दीपक ने मैनाक के साथ स्पर्धा करने को मान लिया। पहले मैनाक ने वीणा बजाई; फिर वही राग दीपक ने बजाया। मैनाक ने दीपक के पैरों पर गिरकर कहा-"आप तो सरस्वती देवी के वरद पुत्र हैं। मैंने जादू-टोना फूंकनेवाला समझकर आपके प्रति अपचार किया है। मुझे क्षमा कर दीजिएगा।"

दरबारियों ने राजा को उकसाया कि दीपक का सम्मान करने के लिए फिर ऐसा कोई मौक़ा हाथ न लगेगा। राजा ने पहले संकोच किया कि शायद दीपक सम्मान कराने को मान नहीं लेंगे। फिर भी राजा ने पूछा, तब तुरंत दीपक ने मान लिया।

राजा ने आश्चर्य में आकर पूछा- "दीपक! जब आप ने देश को अकाल से बचाया, तब मैंने आप का सम्मान करना चाहा, लेकिन आप ने सम्मान पाने से इनकार किया, मगर अब कैसे मान लिया? आखिर इसका क्या कारण है?"

"महाराज! मैंने कभी नहीं सोचा कि मैंने अपनी शक्ति के बल पर वर्षा कराई है। मेरा मेघ मल्हार राग का आलाप करना और मेघों का बरसना भी संयोग की बात हो सकती है! ऐसा न होकर अगर उसके पीछे यदि किसी की शक्ति है तो, वह सरस्वती देवी की है। उनका अनुग्रह मुझ पर रहा, यही मेरे लिए सबसे बड़ा सम्मान है। ऐसी हालत में उस वास्ते मैं दूसरा सम्मान क्यों कराऊँ? इस वक़्त तो मैंने एक वीणा के विद्वान के रूप में एक और विद्वान पर विजय प्राप्त की है, इसलिए आप मेरा सम्मान कीजिए, मैं खुशी से अपना सम्मान करवा लूंगा।" दीपक ने विश्वास के साथ उत्तर दिया।
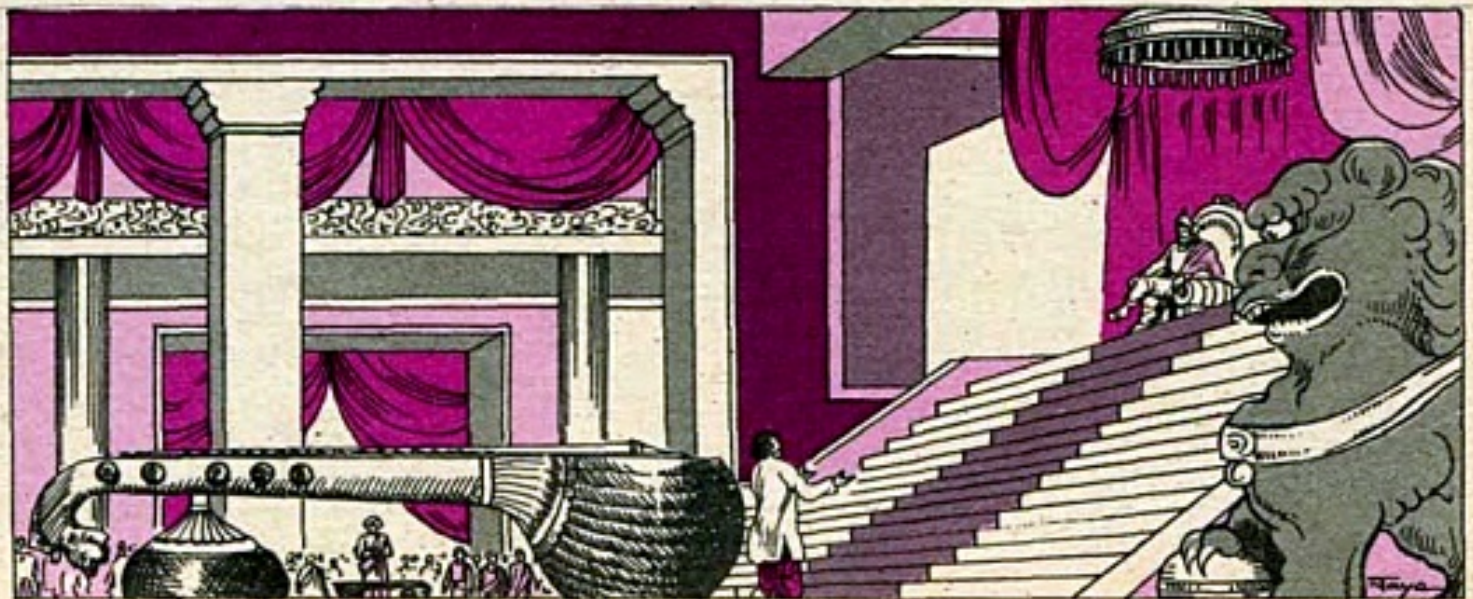
रंग बदलनेवाली माला

कई हजार साल पहले एक जंगल में कालासुत नामक एक राक्षस रहा करता था। वह नरभक्षी था। एक बार एक मुनि उसके हाथ में पड़ गया। मुनि ने उसे समझाया-"हे राक्षस, सुनो! तुम मुझे खाओगे तो तुम्हारी भूख मिटनेवाली नहीं है। मैं अपने तपोबल से तुम्हें मार सकता हूँ, लेकिन इसके बदले में मुझे फिर एक सौ साल तप करना पड़ेगा। तुमने अपने पिछले जन्म में कई पाप कार्य करके यों राक्षस का जन्म पाया है। अगर तुम मुझे प्राणों के साथ छोड़ दोगे तो तुम्हें थोड़ा पुण्य प्राप्त होगा।"

कालासुर थोड़ी देर सोचता रहा, तब पूछा-"मुनिवर, बताइये, इस राक्षस जन्म से मुक्ति पाने के लिए मुझे क्या करना होगा?"

मुनि ने सोचा-"इसने राक्षस जन्म लिया है, इसलिए मुनियों को खाने से मना करने पर यह मानेगा नहीं! मगर इस कलियुग में सच्चे पुण्यात्मा नहीं के बराबर हैं। इसलिए यह सलाह दूं कि इसे केवल पुण्यात्माओं को खाना होगा तो इसे लाचार होकर नर भक्षण बंद करना पड़ेगा।"

यों सोचकर मुनि ने राक्षस से कहा-"मनुष्यों में पुण्यात्मा होते हैं और पापी भी। सड़ा-गला खाना खाना शरीर के लिए जैसे हानिकारक है, वैसे ही पापियों को खाना भी। क्यों कि उनका पाप तुम्हारे अन्दर आ जाएगा। इसलिए तुम सिर्फ़ पुण्यात्माओं को ही खाते अपने भीतर पुण्य बढ़ा लो। कौन पुण्यात्मा है और कौन पापी है? यह जानने के लिए मैं तुम्हें एक माला देता हूँ। उसे तुम अपने गले में पहनकर किसी मानव को छू लो, अगर वह पुण्यात्मा है तो यह माला हरे रंग की हो जाएगी,

पापी हो तो लाल रंग की बन जाएगी।" यों समझाकर मुनि ने सफ़ेद मनकेवाली एक माला राक्षस के हाथ दी।

राक्षस ने वह माला पहन ली, मुनि को पकड़कर बोला–"तुम पुण्यात्मा हो, इसलिए मैं तुम्हीं को खा लेता हूँ।" यों कहकर उसने मुनि को छू लिया तो आश्चर्य की बात थी कि माला हरे रंग के रूप में बदलने के बदले लाल रंग की हो गई। राक्षस ने मुनि को छोड़ दिया।

मुनि सोचने लगा–"मैंने राक्षस को जो सलाह दी, उसके कारण मेरा सारा पुण्य जाता रहा और मुझे पाप लग गया है, शायद मैंने कोई गलती की है।" इसके बाद मुनि अपने आश्रम को चला गया। मुनि इसी चिंता में किसी काम में अपना मन लगा न पाया। कई सालों से उसने जो तपस्या की थी, वह व्यर्थ हो गया है, ऐसा क्यों हुआ? यही जानने के लिए मुनि एक दूसरे वन में तप करनेवाले अपने गुरु के पास पहुँचा।

"तुम्हारी शंका दूर करनेवाला व्यक्ति एक ही है, उसका नाम चिरंजीवी है। इस वक़्त वह विष्णुपुर में है। तुम उसके पास चले जाओ।" गुरु ने समझाया।

मुनि ने विष्णुपुर पहुँचकर चिरंजीवी को देखा। चिरंजीवी एक साधारण मानव की तरह जी रहा था। मुनि को संदेह हुआ कि ऐसा व्यक्ति उसकी मदद क्या कर सकता है? फिर भी गुरुजी ने बताया

था, इसलिए उसने अपनी शंका चिरंजीवी के सामने रखी ।

चिरंजीवी ने सारी बातें सुनकर कहा–"आप ने तपस्या करके शायद पुण्य कमा लिया हो, मगर अपनी बुद्धि का विकास नहीं किया है । आप ने खुद देख लिया है कि आप ही को खाने की कोशिश करनेवाला वह राक्षस कैसा दुष्ट है? अगर दुनिया में थोड़े से पुण्यात्मा हैं तो उनको खाने पर यह दुनिया क्या पापियों से भर न जाएगी? सच्ची बात तो यह है कि दुनिया की रक्षा करने के लिए थोड़े से पुण्यात्मा ही काफी हैं । क्या एक ही सूर्य सारे संसार को प्रकाश और जीवन नहीं दे रहा है?"

"तब तो मेरे द्वारा बड़ी भारी भूल हो गई है न?" मुनि ने पूछा ।

"इस वास्ते आप को दुखी होने की कोई ज़रूरत नहीं है । आप इसी वक़्त राक्षस के पास जाकर बताइये कि आप के द्वारा भूल हो गई है ।" चिरंजीवी ने समझाया ।

"क्या राक्षस मेरी बात पर यक़ीन करेगा?" मुनि ने पूछा ।

"आप यह न कहिये कि आप की सलाह गलत है । यही बताइये कि रंग के विषय में भूल हो गई है; आत्म-रक्षा के वास्ते झूठ बताया है ।" चिरंजीवी ने कहा ।

इस पर मुनि फिर राक्षस के पास चला गया । राक्षस ने मुनि से पूछा–

"तुम्हारी सलाह ने मेरा दम तोड़ दिया। लगता है कि मनुष्यों में कोई पुण्यात्मा नहीं है। आज तक मुझे एक भी पुण्यात्मा दिखाई नहीं दिया।"

राक्षस के द्वारा अपनी सलाह का पालन करते देख मुनि खुश होकर बोला–"मनुष्यों में पापियों की अपेक्षा पुण्यात्माओं की संख्या ज्यादा है। मानव का जन्म सर्वोत्तम है। इसलिए मैंने अपनी रक्षा करने के लिए तुम से रंगों के बारे में झूठ बोल दिया है। वास्तव में पुण्यात्माओं को छूने से माला का रंग लाल हो जाता है। यही बात बताने के लिए मैं फिर तुम्हारे पास आया हूँ।"

"क्या यह बात सच है?" यों कहते राक्षस ने क्रोध में आकर मुनि को पकड़ लिया। मुनि जानता था कि राक्षस के छूते ही माला लाल रंग की हो जाएगी और तब राक्षस उसे खा डालेगा, फिर भी अपनी भूल सुधारने के लिए मुनि अपने प्राण खोने को भी तैयार हो गया। मगर उसकी कल्पना के विपरीत माला हरे रंग की हो गई। इस पर अचरज में आकर राक्षस ने पूछा–"यह क्या?"

"क्यों कि मैं तुम को पुण्यात्माओं को मारने के लिए भेज रहा हूँ न? वह पाप मुझे छू गया है।" मुनि ने निडर होकर उत्तर दिया।

पर मुनि को एक बात स्पष्ट मालूम हो गई, वह यह कि उसने अपने प्राणों का मोह छोड़कर एक अच्छा काम करना चाहा, जिससे उसके सारे पाप जाते रहे। यह भी उसे मालूम हुआ कि एक बुरे काम का भी मूल्य न रखनेवाला तप अनुपयोगी है। तब उसने निर्णय किया कि चिरंजीवी के पास जाकर अच्छे काम करते अपनी ज़िंदगी बिता दे।

चिरंजीवी ने मुनि को समझाया–"तपस्या के द्वारा उसी व्यक्ति का लाभ होता है जो तप करता है; लेकिन अच्छे काम करने से अनेक लोगों का कल्याण होता है।"

वसिष्ठ

देवर्षियों की जाति में सप्तर्षि भी प्रमुख स्थान रखते हैं। देवर्षियों में प्रथम व्यक्ति बृहस्पति हैं। सप्तर्षियों में वसिष्ठ का स्थान प्रथम है। बृहस्पति की भांति सप्तर्षि भी नक्षत्रों के रूप में आसमान में दिखाई देते हैं। वास्तव में बृहस्पति (गुरु) सूर्य की परिक्रमा करनेवाला एक ग्रह मात्र है। लेकिन सप्तर्षि सूर्य की जाति से संबंधित नक्षत्र हैं। उनमें वसिष्ठ नामवाले नक्षत्र के बाजू में अस्पष्ट दिखाई देनेवाला एक और नक्षत्र है, वही अरुंधती है, जो वसिष्ठ की पत्नी है।

एक बार वसिष्ठ विवाह करने का निश्चय कर बालू को पकाकर खिला सकनेवाली कन्या की खोज करते एक हरिजन बस्ती में पहुँचे। वहाँ पर एक कन्या ने बालू की रसोई बनाकर भोजन करने का वसिष्ठ से निवेदन किया। पर वसिष्ठ ने शर्त रखी कि यदि वह कन्या उनकी पत्नी बने तभी वे खाना खायेंगे। इस प्रकार वह कन्या वसिष्ठ की पत्नी बनी, वही अरुंधती है।

ऋषि विश्वामित्र और वसिष्ठ के बीच गहरी दुश्मनी थी। वे दोनों सरस्वती नदी के दो किनारों पर निवास करते थे। एक बार विश्वामित्र ने वसिष्ठ का वध करना चाहा और उन्हें अपने यहाँ बुला लाने का आदेश सरस्वती को दिया। लेकिन सरस्वती वसिष्ठ की मृत्यु नहीं चाहती थी। मगर विश्वामित्र के आदेश का पालन न करे तो उसे शाप देंगे। इस कारण सरस्वती वसिष्ठ को उस पार ले गई और उनका वध करने के पहले ही फिर से इस पार ले आई।

उन दो ऋषियों के बीच की दुश्मनी आखिर अनेक अनर्थों का कारण बन गई।

एक बार वसिष्ठ राजा मित्रसहु के यहाँ अतिथि बनकर पहुँचे । उस राजा से द्वेष करनेवाले एक राक्षस ने धोखे से वसिष्ठ के भोजन में मनुष्य का माँस मिला दिया । वसिष्ठ ने सोचा कि राजा ने यह काम जान-बूझकर किया है और उन्होंने राजा को शाप दिया । राजा ने भी वसिष्ठ को शाप देने के लिए अपने हाथ में जल लिया, लेकिन उस जल को वसिष्ठ पर न छिड़काकर अपने ही पैरों पर छिड़क लिया और इस तरह वह कल्माषपाद बना ।

फिर भी कल्माषपाद को वसिष्ठ का शाप लग गया । इसके बाद जब कल्माषपाद्र अपने रास्ते जाने लगा, तब उसे वसिष्ठ का 'शक्ति' नामक पुत्र दिखाई दिया । इस पर दोनों में झगड़ा हुआ । इसे देख विश्वामित्र ने एक राक्षस को कल्माषपाद के भीतर आवाहन किया जिससे राजा ने शक्ति तथा वसिष्ठ के सौ पुत्रों को मार डाला ।

अपने पुत्रों की मृत्यु पर दुखी हो वसिष्ठ आत्महत्या करने के ख्याल से अग्नि में कूद पड़े । इस पर अग्नि ठण्ड़ी पड़ गई । तब वसिष्ठ समुद्र में कूद पड़े । समुद्र ने उन्हें किनारे लगा दिया ।

आखिर वे निराश हो अपने आश्रम को लौट आये, तब उन्हें अपनी बहू के गर्भ में से वेद-पठन सुनाई दिया । वसिष्ठ ने सोचा कि अपने पोते को देख तब मर जावे, इस ख्याल से वे आश्रम में ही रह गये ।

इसके बाद राक्षस के वशीभूत कल्माषपाद एक दिन वसिष्ठ की बहू का पीछा करते आ धमका । वसिष्ठ ने उस पर मंत्र-जल फूंक दिया, इस पर कल्माषपाद शाप से मुक्त हुआ ।

वसिष्ठ ने सूर्यवंशी राजाओं के यहाँ कुल गुरु का काम किया था । राजा दशरथ की संतान के हेतु उन्होंने पुत्रकामेष्ठि यज्ञ कराया था । एक बार संवरण नामक राजा सूर्य की पुत्री तपती पर मोहित हुए, इस पर उनके पुरोहित बने वसिष्ठ ने सूर्य को समझाकर तपती के साथ उस राजा का विवाह भी कराया था ।

सुरपुष्पमाला

विदर्भ राजा भोज की पुत्री इंदुमती थी। शाप के कारण मानव-जन्म धारण करनेवाली वह एक अप्सरा थी। पहले उसका नाम हरिणी था। वह इंद्र की सभा में नृत्य किया करती थी।

तृणबिंदु नामक एक महामुनि तपस्या कर रहे थे। उनका तपोभंग करने के लिए इन्द्र ने हरिणी को पृथ्वी लोक में भेजा था। क्यों कि इन्द्र का भय था कि तृणबिंदु की तपस्या सफल होने पर वे इंद्र-पद को प्राप्त कर लेंगे।

हरिणी ने तृणबिंदु की तपस्या तो भंग कर दी, लेकिन उनको आकृष्ट नहीं कर पाई। इस पर तृणबिंदु ने हिरणी को मानव जन्म धारण करने का शाप दिया। हरिणी ने शाप से मुक्ति पाने का उपाय बताने के लिए मुनि से प्रार्थना की। तब उन्होंने बताया कि उसे पूर्व जन्म की स्मृति आने पर वह शाप से मुक्त हो जाएगी।

इंदुमती जब युक्त वयस्का हुई, तब राजा भोज ने उसके स्वयंवर की घोषणा की और सभी देशों के राजाओं के पास निमंत्रण भेजें ।

अयोध्या के राजा अज एक स्वयंवर में जा रहे थे, रास्ते में एक हाथी से उनका सामना हुआ । इस पर अज ने हाथी से लड़कर उसे मार डाला ।

मृत हाथी के भीतर से एक गंधर्व प्रकट हुआ । उसने बताया कि एक शाप के कारण वह हाथी बन गया है, अब इस प्रकार वह शाप से मुक्त हो गया है, इसके कृतज्ञता स्वरूप उसने अज को एक सम्मोहन अस्त्र दे दिया ।

स्वयंवर में इंदुमती ने अज का वरण किया और उनके कंठ में वरमाला डाल दी। सभी राजा इंदुमती के साथ विवाह करने की इच्छा रखते थे, इस कारण वे सब अज पर टूट पड़े।

उस वक्त अज और अन्य राजाओं के बीच युद्ध हुआ। उस युद्ध में गंधर्व के द्वारा प्राप्त सम्मोहन अस्त्र का प्रयोग करके अज ने सभी राजाओं को कुछ ही क्षणों में बेहोश कर दिया।

इसके बाद राजा अज इंदुमती को अपने साथ ले अयोध्या को लौट आये, और सुखपूर्वक राज्य-शासन करने लगे।

उस दंपति के एक पुत्र हुआ। वही राजा पुराण प्रसिद्ध दशरथ हैं और कालक्रम में वे ही रामचन्द्रजी के पिता बने।

कई साल बीत गये। एक दिन नारद स्वर्ग से भूलोक में उतर रहे थे। उनकी वीणा पर अलंकृत सुरपुष्पमाला खिसककर नीचे गिर पड़ी।

उस वक्त इंदुमती उद्यान में विहार कर रही थी, तब वह माला उस पर गिर पड़ी। दूसरे ही क्षण उसे अपने पूर्व जन्म की याद हो उठी। इस पर वह शाप से मुक्त हो गई, और इंदुमती के रूप में अपनी देह त्याग कर फिर से हरिणी बन गई और स्वर्ग में चली गई।

अग्नि

विश्वानर नामक एक ब्राह्मण ने एक पुत्र पाने की कामना से काशी में शिवजी के प्रति तपस्या की। शिवजी ने उसे पुत्र-संतान का वर दिया। विश्वानर की पत्नी शुचिस्मती ने गर्भवती होकर एक पुत्र का जन्म दिया। वह बालक विश्वानर का पुत्र था, इस कारण उसका नाम वैश्वानर पड़ गया। लेकिन देवताओं ने उसका नामकरण अग्नि किया।

एक दिन नारद मुनि विश्वानर को देखने आये। उस वक़्त अग्नि को देख नारद ने बताया कि बारह साल की उम्र में इसे प्राणों का ख़तरा है। इस पर विश्वानर चिंता में पड़ गया। लेकिन अग्नि ने अपने पिता को हिम्मत बंधाई और काशी जाकर शिवजी के प्रति घोर तपस्या की।

इंद्र अग्नि को तपस्या करते देख डर गये और उसका तप बंद कराने के लिए वे स्वयं आ पहुँचे। उन्होंने अग्नि से पूछा–"बेटा, बताओ, तुम कैसा वर चाहते हो?"

"महात्मा! मैं आप से वरदान पाने के लिए तपस्या नहीं कर रहा हूँ, मैं तो शिवजी के प्रति तप कर रहा हूँ।" अग्नि ने लापरवाही से उत्तर दिया। इस पर इंद्र ने कुपित होकर अग्नि पर अपने वज्रायुध का प्रहार किया। अग्नि बेहोश हो गया। नारद मुनि के कहे अनुसार अग्नि को प्राणों का ख़तरा उत्पन्न हुआ।

लेकिन उसी वक़्त शिवजी ने प्रवेश करके अग्नि से कहा–"बेटा, उठो, तुम दीर्घायु बन जाओ।" इस प्रकार उसे आशीर्वाद देकर उस बालक को एक लोक का अधिपति बनाया। वही अग्नि लोक है जो आग्नेय दिशा में है। इस तरह अग्नि अष्ट दिक्पालों में एक हो गया। वह अष्ट वसुओं में भी एक है। यज्ञों के

समय देवताओं को हव्य प्रदान करने का काम अग्नि का है। अग्नि की पत्नी का नाम स्वाहादेवी है, उसका वाहन बकरी है।

एक बार महर्षि भृगु ने किसी कार्य पर जाते हुए अपनी पत्नी से कहा कि वह अग्नि की रक्षा करे। उस वक़्त पुलोम नामक एक राक्षस आया और उसने भृगु की पत्नी को देख अग्नि से पूछा—"यह औरत किसकी पत्नी है?"

अग्नि ने उत्तर दिया—"यह तो भृग महर्षिजी की पत्नी पुलोमा है।"

"तब तो इसे मेरी पत्नी बन जाना चाहिए था, पर भृग ने इसके साथ विवाह किया है।" यों कहकर राक्षस भृगु महर्षि की पत्नी पुलोमा को उठा ले गया। इसके बाद राक्षस पुलोम को भृग पत्नी पुलोमा के पुत्र ने मार डाला। तब पुलोमा ने अपने पति से अग्नि की शिकायत की। भृगु महर्षि ने क्रोध में आकर अग्नि को सर्व भक्षक बन जाने का शाप दे दिया। इस पर अग्नि रूठ गया और देवताओं को हव्य देना बंद कर दिया। देवताओं ने विष्णु के पास जाकर शिकायत की कि अग्नि उन्हें हव्य नहीं पहुँचा रहा है। विष्णु देवताओं को साथ ले अग्नि के पास पहुँचे, अग्नि की प्रशंसा करते हुए बोले—"तुम सर्व भक्षक हुए तो क्या हुआ? तुम तो सदा स्वच्छ रहते हो! समस्त को पवित्र बनाते हो!" इसके बाद फिर अग्नि को हव्य वाहन बनाया।

उन दिनों में श्वेतकी नामक राजा ने कई यज्ञ किये, फल स्वरूप अग्नि के लिए बदहजमी हो गई। अग्नि ने शिकायत की कि उसकी पाचन शक्ति बिगड़ गई है। तब ब्रह्मा ने उसे सलाह दी कि तुम अच्छे औषधोंवाले खांडववन को जला दोगे तो फिर से पूर्ण स्वस्थ बन जाओगे। अग्नि ने कृष्ण और अर्जुन की मदद से खांडव वन को जलाया और अपना खोया हुआ स्वास्थ्य फिर से प्राप्त किया। तब उसने पुरस्कार स्वरूप अर्जुन को गांडीव तथा कृष्ण को चक्रायुध प्रदान किया।

कुठली में सोना

कमलपुर का जमीन्दार दान देने में मशहूर था। जब वह बूढ़ा हो गया, तब तक सारी जमीन्दारी जाती रही। कचहरी के सिंह द्वार की उत्तरी दिशा में तीन मील तक एक पगडंडी थी, उस पगडंडी के छोर पर पहाड़ों के बीच एक सरोवर था।

जमीन्दार ने गाँव के बुजुर्गों को बुलवाकर समझाया—"मैं आप लोगों को एक रहस्य बताना चाहता हूँ। मेरे कोई संतान नहीं है, इसलिए आप ही लोग मेरे बच्चे हैं। मैंने सुना है कि कचहरी से सरोवर तक जानेवाले रास्ते में कहीं मेरे पिताजी ने एक कुठली भर सोना गाड़ रखा है। मेरे मरने के बाद उसे खोदकर बाँट लीजिए। मेरी आत्मा की शांति के लिए आप लोगों को क्या करना होगा, यह बात इस पेटी के अन्दर रखी हुई चिट्ठी में लिखी गई है। मगर मेरी शर्त यह है कि सोना प्राप्त हो जाने के बाद ही आप लोग यह पेटी खोलकर देखिये।" यों कहकर जमीन्दार ने अपने प्राण त्याग दिये।

गाँव के लोगों ने तीन मील दूरी तक की पगडंडी को खोदकर देखा, पर सोने की कुठली नहीं मिली। आखिर चिट्ठी निकाल कर पढ़ा। उसमें लिखा था—"आप लोग निराश मत होइये कि सोना नहीं मिला। इस नहर को सरोवर के साथ जोड़ दीजिए। आप की जमीन सोना उगलेगी और आप की कुठलियाँ सोने से भर जायेंगी।"

भूतों की कोठी

एक देहाती व्यापारी शहर में व्यापार करने के ख्याल से अपनी सारी जमीन-जायदाद बेचकर अपने दो पुत्रों के साथ शहर पहुँचा। उसने अपनी संपत्ति में से ज़्यादा हिस्सा व्यापार में लगाया, बची-खुची रक़म से एक पुराना मकान खरीदकर उसमें निवास करने लगा। व्यापार में उसे नुक़सान हुआ, आखिर इसी चिंता में घुल-घुलकर व्यापारी अल्प आयु में ही मर गया।

व्यापारी के बड़े पुत्र ने छोटे से कहा—"भैया, यह पुराना मकान रास नहीं आ रहा है, इसे बेचकर हम कोई दूसरा व्यापर शुरू करेंगे।"

छोटे भाई ने मान लिया।

इसके बाद दोनों भाई घर के सारे माल-असबाब की जांच करते सीढ़ियों के नीचेवाली कोठी खोल उसमें घुस पड़े। उसमें सिर्फ़ टूटा-फूटा लकड़ी का सामान था, कोई क़ीमती चीज़ न थी।

बड़े भाई ने छोटे से कहा—"इस कोठी में अपने साथ ले जाने लायक़ कोई चीज़ नहीं है। इस सामान को वैसे ही रखकर हम यह मकान बेच डालेंगे।"

बड़ा भाई ये बातें कह ही रहा था कि इतने में उस कोठी में कोई आकृति प्रत्यक्ष हुई। उसे कोई भूत समझकर दोनों भाई एक दम घबरा गये।

"क्या कहा? तुम लोग यह मकान सचमुच बेच रहे हो?" एक भूत ने उन भाइयों से पूछा।

बड़े भाई ने हिम्मत करके जवाब दिया—"हाँ, हाँ, यह मकान हमें रास नहीं आ रहा है। कोई व्यापार भी करना चाहे तो हमारे हाथ खाली हैं। एक कौड़ी भी नहीं बची।"

राधा मुकुंद वर्मा

"नहीं, नहीं, तुम लोग यह मकान मत बेचो। मैं इस कोठी में शांति के साथ तपस्या कर रहा हूँ। तुम लोग इसे किसी दूसरे के हाथ बेच दे तो वे मेरी शांति में खलल डाल सकते हैं। या इस मकान को गिराकर नया मकान भी बना सकते हैं।" भूत ने कहा।

"तुम्हारी भलाई की बात सोचे तो हमारा बसर कैसे होगा?" दोनों भाइयों ने एक स्वर में पूछा।

"तुम लोग सिर्फ़ धन चाहते हो न? मैं तुम्हें धन दूँगा। अपनी पसंद का कोई व्यापार करो।" यों समझाकर भूत ने उन्हें थोड़ा धन लाकर दिया, तब वह अदृश्य हो गया।

दोनों भाइयों ने खुश होकर उस कोठी में ताला लगाया। इसके बाद छोटे ने पूछा—"हमें तो बड़ी आसानी से इतना सारा धन हाथ लग गया है। हम अब कौन-सा व्यापार करे?"

"तुम्हारी अक़्ल भी चरने गई है। कामधेनु जैसे भूत को घर में रखकर हम व्यापार ही क्यों करें? जब चाहे तब भूत से माँगकर हम आवश्यक धन ले सकते हैं न?" बड़े भाई ने समझाया।

फिर क्या था, दोनों भाइयों ने शराब पीकर, जुआ खेलकर सारा धन दो हफ़्ते

के अंदर खर्च कर डाला। अब फिर उनके हाथ खाली हो गये।

धन के खतम होते ही फिर भूतोंवाली कोठी खोलकर दोनों ने कहा—"तुमने जो रुपये दिये, उनसे हमने कपड़ों का व्यापार किया। कल रात को आग लगने से सारा माल जल गया है। पहले ही हमने सोचा ही था कि यह मकान हमें रास नहीं आएगा। हम इसे बेच डालेंगे।"

"तुम्हारी असावधानी से जो नुक़सान हुआ है, तुम लोग इस मकान पर उसका दोष क्यों मढ़ते हो? मैं फिर तुम्हें धन देता हूँ। कोई दूसरा व्यापार शुरू करो।"

यों समझाकर भूत ने उन भाइयों को थोड़ा और धन दिया।

इस बार उन भाइयों ने दस ही दिन में सारा धन खर्च कर डाला।

"यह मकान सचमुच रास आनेवाला नहीं है; शायद मेरे नाम पर व्यापार करने से इस बार नुक़सान हो गया हो, अब मैं अपने छोटे भाई के नाम व्यापार करूँगा।" यों झूठ बोलकर बड़े भाई ने भूत से धन वसूल किया।

वह धन भी दस दिनों में खर्च हो गया। इस पर बड़े भाई ने छोटे से कहा—"हमें तो इस तरह छोटी-छोटी रक़म नहीं, एक ही साथ भारी रक़म वसूल करनी है।"

यों निर्णय करके दोनों भाई उत्साह के साथ भूत की कोठी पर पहुँचे और जोरदार शब्दों में बोले—"भूत महाशय! व्यापार हमें रास नहीं आ रहा है। इस बार हम जमीन खरीदकर खेतीबाड़ी करके देखेंगे। भारी रक़म दे दो।"

भूत थोड़ी देर सोचता रहा, फिर बोला—"सचमुच यह मकान रास न आनेवाला सा लगता है। तीनों बार तुम्हें व्यापार में घाटा हो गया है। तुम्हारे बाप को भी यह मकान रास नहीं आया। मैं आज तक यही सोचता रहा कि इस मकान में शांति के साथ तपस्या करके इस जन्म से मुक्ति पा लूँ, लेकिन मुझे ऐसा मालूम होता है कि यहाँ पर मेरी इच्छा की पूर्ति कभी होनेवाली नहीं है। यह सचमुच रास न आनेवाला मकान है। इसे तुम लोग जल्दी बेच डालो। मैं कोई और जगह ढूँढ लेता हूँ।" यों कहकर भूत गायब हो गया।

दोनों भाई इस अनहोनीवाली घटना पर एक दम निराश हो गये।

उसी दिन रात को भारी वर्षा हुई। साथ ही उस मकान पर बिजली गिरी। जैसे-तैसे दोनों भाई जान बचाकर घर से बाहर निकल आये, मगर बेचना चाहे तो अब मकान भी नहीं बचा था।

जादू की घंटी

मोतीपुर के राजवंश में कुछ विचत्र रिवाज़ों का प्रचलन था। वैसे नियमानुसार राजा का ज्येष्ट पुत्र गद्दी का अधिकारी होता था, लेकिन किसी वजह से अगर वह शारीरिक या मानसिक शक्तियों से वंचित हो जाता, उसे राज्याधिकार प्राप्त नहीं होता था। उसके बाद का युवक राजा बन जाता था। मगर ज्येष्ट पुत्र मर जाता तो राज्य की आमदनी में से आधा हिस्सा एक पीढ़ी तक मंदिर को देना पड़ता था।

मोतीपुर के राजा विक्रम के श्रीमती और सुमती नामक दो पत्नियाँ थीं। उनके क्रमशः कमल और कुनाल नामक दो पुत्र थे। बड़ा पुत्र कमल जब चौदह साल का हो गया तब राजा ने उसे युवराजा घोषित किया। यह समाचार सुनकर ईर्ष्यालू छोटी रानी सुमती दुखी हो गई। यदि कमल को राजा बनने से नाक़ाबिल साबित कर दे तो उसका पुत्र कुनाल राजा बन जाएगा। पर कमल को विकलांग कैसे बनाया जाय? यही समस्या थी।

सुमती एक बार अपने मायके पहुँची। जटिला नामक अपनी फूफी के सामने अपनी समस्या रखी। जटिला ने पूछा— "क्या तुम कमल के पैर या हाथ तुड़वाने का कोई उपाय नहीं कर सकती?"

"यह काम ख़तरे से ख़ाली नहीं है। क्योंकि इस प्रयत्न में अगर उसके प्राण निकल जाये तो ख़जाने की आधी संपत्ति मंदिर को चली जाएगी। साथ ही हमारे लिए खतरा होगा। हमारी मदद करनेवाले लोग अंत में हमें धोखा भी दे सकते हैं।" सुमती ने समझाया।

जटिला थोड़ी देर तक सोचती रही, फिर एक बोतल में कोई दवा डालकर

श्री ए. सी. सरकार, जादूगर

सुमती के हाथ देते हुए बोली–"तुम इस दवा को एक-एक बूंद के हिसाब से कमल को दूध देते वक़्त मिला दो। धीरे-धीरे वह गूंगा हो जाएगा। तब वह राजा नहीं बनेगा, तुम्हारा पुत्र राजा बन जाएगा।"

सुमती घर लौट आई। रात के वक़्त जब अपने पुत्र व अपने सौतेले पुत्र को दूध भेजा करती थी, तब युवराजा के दूध में दवा मिलाकर भेजती गई। धीरे धीरे कमल का गला बैठता गया और आख़िर उसकी बोली बंद हो गई। वैसे दोनों रानियाँ एक ही महल में अलग-अलग कमरों में रहा करती थीं, मगर दोनों परिवारों के लिए एक ही रसोई घर था। उसकी देखभाल सुमती करती थी। मंत्री धीमान को यह संदेह हुआ कि राजकुमार की बोली बंद हो जाने के पीछे कोई षड़यंत्र है। उसने एक परिचारिका को सुमती की सेवा में नियुक्त किया और उससे भेदिया का काम लेने लगा। उसी समय राजकुमार का इलाज कराने के लिए कलिंग देश से रघुनाथ नामक एक वैद्य को बुलवाया।

रघुनाथ देखने में काला व दुबला था। ऐसा लगता था कि वह साधारण इलाज करने के भी क़ाबिल नहीं है। राजा भी यह विश्वास नहीं कर पाये कि जब बड़े बड़े नामी दरबारी वैद्य राजकुमार का इलाज न कर पाये, रघुनाथ क्या कर

सकेगा? यों विचार कर रघुनाथ से इलाज़ कराने से इनकार किया।

अब मंत्री धीमान की समझ में न आया कि क्या किया जाय! उस हालत में दरबारी जादूगर सोमनाथ ने धीमान को एक उपाय बताया। धीमान ने रघुनाथ को राजा के पास ले जाकर समझाया– "महाराज, ये रघुनाथ वैद्य शास्त्र के बड़े पंडित हैं। ये अपनी औषधों के प्रभाव से निर्जीव पदार्थों से बोलवा सकते हैं। आप चाहे तो इनकी परीक्षा ले सकते हैं।"

"अच्छी बात है!" राजा ने स्वीकृति दी।

इस पर मंत्री ने देवता की अर्चना करनेवाली छोटी-सी घंटी निकालकर उसे बजवा दिया, फिर घंटी के भीतर की जीभ निकालकर हिलाया, तब घंटी नहीं बजी, फिर उसकी जांच करने के लिए राजा के हाथ दिया, राजा ने हिलाया, घंटी नहीं बजी। इसके बाद मंत्री ने वह घंटी रघुनाथ के हाथ दे दी। रघुनाथ ने बे जीभवाली उस घंटी पर दो बूंदें दवा छिड़क डाली, उसे अपने दायें हाथ में लेकर हिलाया। आश्चर्य की बात थी कि घंटी बजने लगी। यों तीन-चार बार बजाकर रघुनाथ ने वह घंटी मंत्री के हाथ दी। मंत्री ने उसे राजा के हाथ दिया। राजा ने हिलाया, घंटी नहीं बजी।

"महाराज! आप इस महान वैद्य के द्वारा युवराजा कमल का इलाज़ करवा दीजिये।" मंत्री ने सलाह दी।
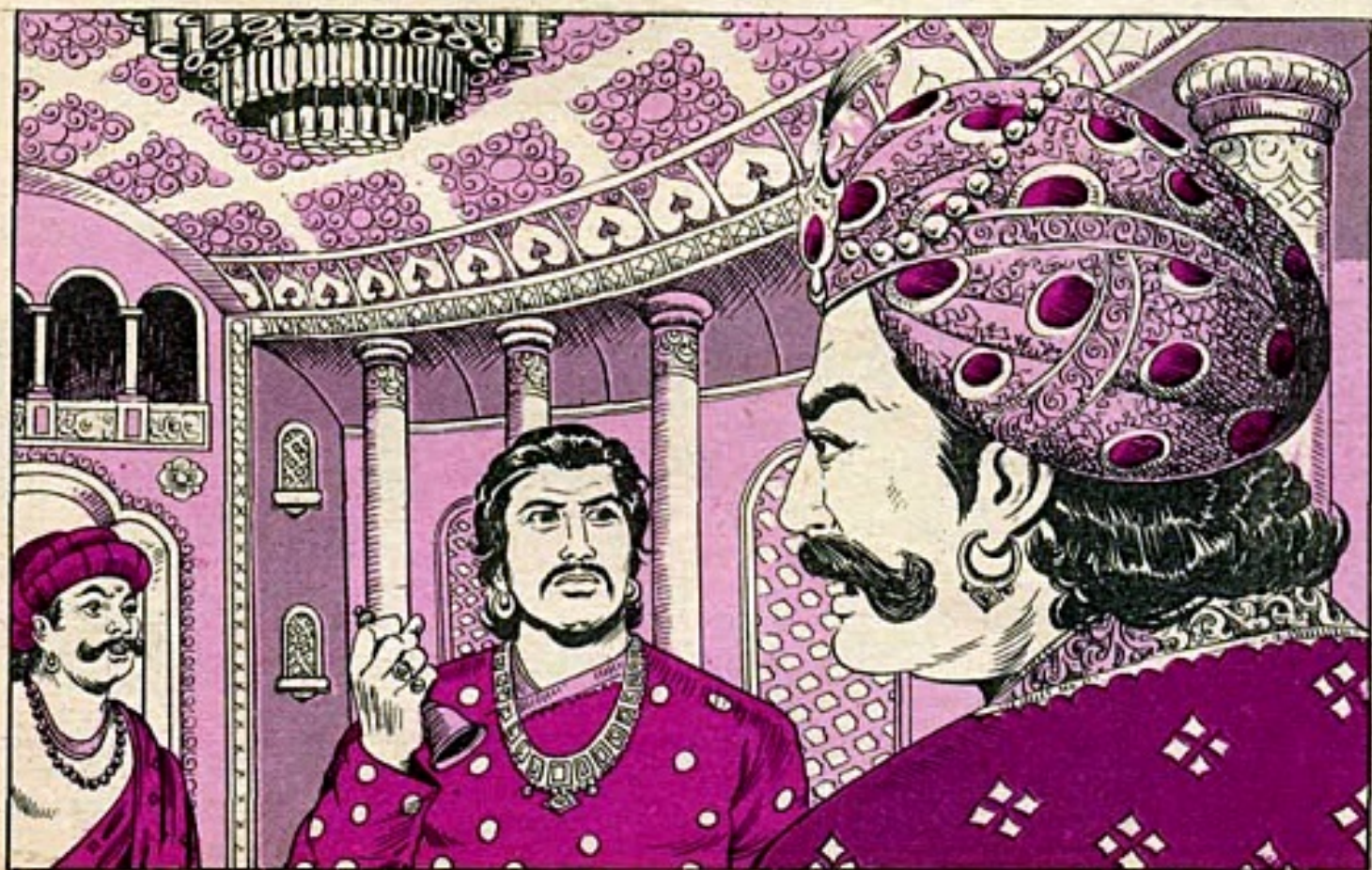
रघुनाथ ने कमल की जाँच करके मंत्री से बताया–"मंत्री महोदय, इन पर कोई जहर का प्रयोग कर रहे हैं।"

मंत्री ने भेदिया परिचारिका को चेतावनी दी। परिचारिका ने देखा कि सुमती दूध के एक गिलास में दवा की बूँदें गिरा रही हैं। यह बात उसने मंत्री से बताई। मंत्री ने परिचारिका के द्वारा दवा की वह शीशी गुप्त रूप से मँगवाई और उसकी जगह वैसी ही कोई दूसरी शीशी रखवा दी।

इसके बाद रघुनाथ ने युवराजा का इलाज करना शुरू किया। युवराजा में बोलने की ताक़त आ गई। सुमती तो दूध में दवा की बूँदें डालती रही, मगर उसका असर नहीं हो रहा है।

आखिर कमल का इलाज पूरा हो गया। मंत्री धीमान ने राजा को सुमती के षड़यंत्र का परिचय देकर जहरवाली दवा की शीशी राजा के हाथ सौंप दी। राजा सुमती के कमरे में पहुँचे। एक शीशी निकालकर बोले–"रानी, यह तो जहर नहीं है। जहरवाली शीशी मेरे हाथ में है। तुम इधर थोड़े दिनों से इसी को जहरवाली शीशी मानकर कमल के दूध में इसकी बूँदें गिराती जा रही हो।"

सुमती ने भोली बनकर राजा से पूछा–"महाराज! आप यह जो कह रहे हैं, मेरी समझ में नहीं आता।"

राजा ने अपने हाथ की शीशी दिखाकर उसका काग निकाला और पूछा–"इस शीशी की बूँदें मिलाकर वह दूध तुम अपने पुत्र को पिला दो।"

सुमती को जब मालूम हुआ कि उसके इस षड़यंत्र को परिचारिका ने देख लिया है, तब उसने अपनी गलती मान ली। राजा ने सुमती को कारागार की सजा सुनाई।

आखिर बे जीभवाली घंटी कैसे बज उठी? वैसी ही एक छोटी-सी घंटी रघुनाथ ने अपने कुर्ते के भीतर हाथ में बांध रखी थी। सोमनाथ ने उसी को बजाकर यह जादू किया था।
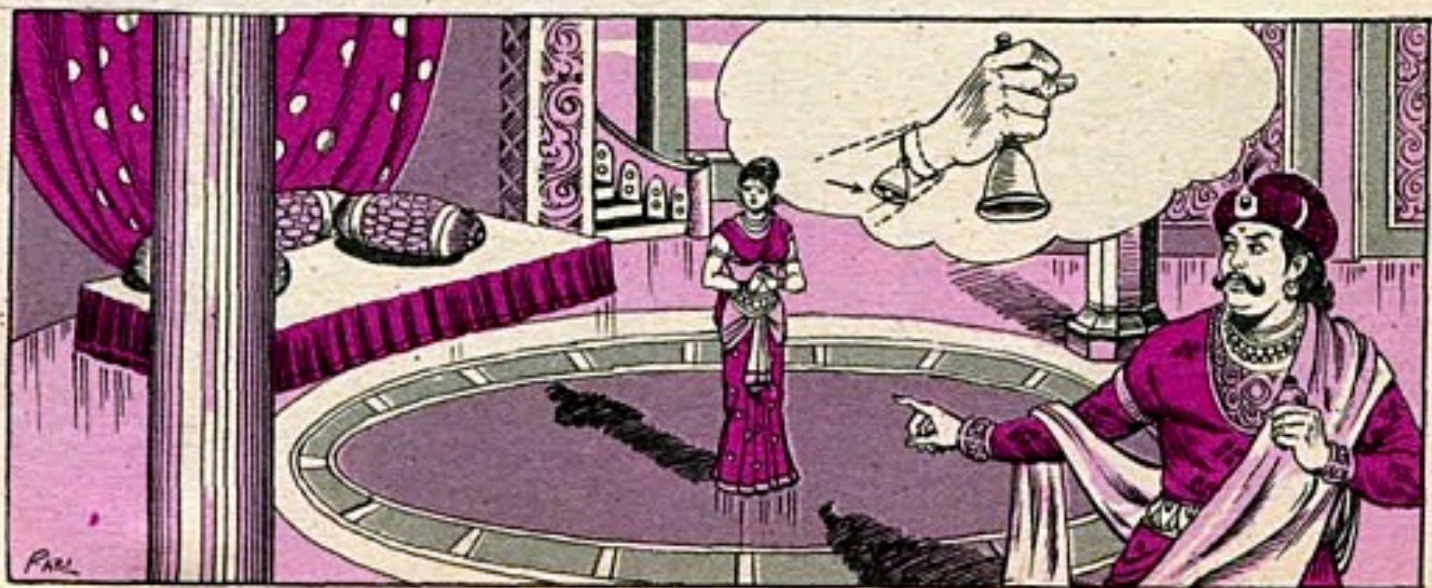
भगवान के साथ शतरंज

पुराने जमाने में एक साधू थे। वे बड़े पंड़ित के नाम से मशहूर थे। सारे देश में उनके शिष्य फैले हुए थे। वे सब साधू के दर्शनों के लिए तड़पते थे।

साधू महाराज सिर्फ़ छे महीने ही अपने आश्रम में निवास करते थे। उन दिनों में अपने शिष्यों को वेद और पुराण के रहस्य बताया करते थे। बाक़ी छे महीने देशाटन करते थे। देशाटन के वक़्त उनके शिष्य श्रद्धा और भक्ति के साथ जो कुछ समर्पित करते, उसे ग्रहण कर वे तृप्त हो जाते थे।

इस प्रकार देशाटन करते साधू महाराज एक बार देहातों में रहनेवाले अपने शिष्यों के पास पहुंचे। साधू महाराज को दूर से ही देख वे सारे शिष्य फूले न समाये। उसी वक़्त वे लोग गाने-बजाने और मंगल वाद्यों के साथ साधू की आगवानी करके उन्हें गाँव में ले आये। विष्णु मंदिर के एक मण्डप में उनके ठहरने का इंतज़ाम किया गया।

साधू महाराज के गाँव में पहुँचने की घड़ी से लेकर उस गाँव में कोलाहल बढ़ गया। भजन-कीर्तन, पुराण-पाठ आदि के द्वारा देहाती लोगों के समय का सदुपयोग होने लगा। गाँववाले सोचने लगे कि उनका जीवन धन्य हो गया है।

उस गाँव के लोगों को तराने के बाद साधू महाराज अपना मुकाम दूसरे गाँव में बदलने की तैयारी में थे। इसके पहले उन्हें तो अपने सारे शिष्यों को ख़ुश करना था। अब घंटे भर में साधू उस गाँव से रवाना होनेवाले थे, तब वे अपने डेरे पर कुछ सोचते-विचारते इधर-उधर ठहलने लगे।

उस वक़्त साधू के सामने जंगल में एक आदमी के द्वारा की जानेवाली विचित्र

चेष्टाएँ आश्चर्य जनक प्रतीत हुईं। साधू ने अपने मन में सोचा–"आखिर यह आदमी कौन है? कोई बावरा तो नहीं है?" फिर उन्होंने परखकर देखा, तो उसकी पोशाकें उन्हें एक धनी गृहस्थ की जैसी प्रतीत हुईं।

उसका मर्म जानने के ख्याल से साधू पैदल चलकर उस आदमी के पास पहुँचे। साधू के आगमन का ख्याल न किये बिना वह अपने आप बात करते विचित्र ढंग से हाथ-पैर हिला रहा था।

साधू ने उस आदमी से पूछा–"बेटा, यह तुम क्या करते हो? किससे बात करते हो?"

"बात नहीं, खेल! मैं खेलता हूँ। मैं जिसके साथ यह खेल खेलता हूँ, शायद वे आप को दिखाई नहीं देंगे।" उस नये आदमी ने जवाब दिया।

साधू अचरज में आ गये। फिर उन्हें एक बार संदेह हुआ–"कहीं यह पागल तो नहीं?"

साधू ने फिर सवाल किया–"बेटा! तुम यह कैसा खेल खेलते हो? क्या मैं जान सकता हूँ कि तुम्हारे साथ खेलनेवाला वह दूसरा व्यक्ति कौन है?"

"हाँ! यही असली रहस्य है! फिर भी आप तो दुनिया के हित के वास्ते अवतरित महानुभाव हैं। आप को बताने में आपत्ति ही क्या है? मैं जो खेल खेलता हूँ, वह शतरंज है। मेरे साथ यह खेल खेलनेवाला दूसरा व्यक्ति केवल भगवान हैं?" यों बिना झिझक के उस विचित्र आदमी ने उत्तर दिया।

साधू खिल खिलाकर हँस पड़े। वे अपने मन में सोचने लगे–"इसमें रत्ती भर भी शक नहीं है, यह सचमुच पागल है। मगर उस पागलपन में भी बुद्धिमत्ता और एक क्रम दिखाई देता है।" साधू ने फिर पूछा–"तो जीत किसकी हुई है?"

"थोड़ा रुक जाइये! अभी खेल खतम नहीं हुआ है।" यों कहकर वह थोड़ी देर

तक पेड़ के ऊपर देखता रहा, फिर बोला– "आप ने कहा–'राजू! प्यादे अब चल नहीं सकते!' यह बात मैंने सुनी है। भगवान! आज जीत तो आप की ही हो गई है!" यों कहते उसने अपनी जेब में हाथ रखा।

यह करनी साधू महाराज को और आश्चर्यजनक मालूम हुई। उन्होंने पूछा– "तब तो क्या जीतनेवाले को हारनेवाले के द्वारा कुछ देना पड़ेगा?"

"क्यों नहीं, साधू महाराज! जरूर देना पड़ेगा! प्रत्येक खेल के लिए हम दो सोने के मोहरे दाँव लगा चुके हैं न?" नये आदमी ने बताया।

"तब तो तुम इस वक़्त हार गये हो न? तुमने भगवान को दो मोहरे क्यों नहीं चुकाये?" मजाक़ में आकर साधू ने फिर उस आदमी से पूछा।

बस, साधू के पूछने की देरी थी कि उसने झट से अपनी जेब में से दो मोहरे निकाले और बोला–"भगवान तो कभी भी खुद दाँव का धन मेरे हाथ से स्वयं स्वीकार नहीं करते। उस वक़्त वे किसी महात्मा के रूप में मेरे सामने प्रत्यक्ष हो जाते हैं। उनके हाथ सौंपने पर वह धन सीधे भगवान को मिल जाता है। आज भाग्यवश आप पधारे हैं, इसलिए कृपा करके आप ये दोनों मोहरे ले लीजिए। भगवान को प्राप्त हो जायेंगे।" यों समझाकर आँखों को चौंधियानेवाले दो सोने के मोहरे निकालकर उसने साधू के हाथ धर दिये।

उस वक़्त साधू की समझ में न आया कि क्या करें। वे उसी वक़्त अपने निवास को लौट गये और अपने शिष्यों को समझाया कि पागलों के बीच भी कैसे महान भक्त होते हैं।

दो महीने बाद–

साधू महाराज ने देशाटन करके अपने शिष्यों को तराया, उनसे प्राप्त भेंट-उपहारों की गठरी बांधकर घर की ओर चल पड़े।

वापसी यात्रा में उन्हें संयोग से उसी गाँव में रुकना पड़ा।

उस गाँव में पहुँचते ही साधू महाराज को उस विचित्र आदमी की याद हो आई। साधू ने उस जंगली प्रदेश में देखा, वह पागल उन्हें उसी जगह दिखाई दिया। कुतूहलवश साधू महाराज उस आदमी के पास पहुँचे और विनोदपूर्वक पूछा–"बेटा! आज किसकी जीत हुई है?"

खेलनेवाले उस व्यक्ति ने पहले की भांति एक बार सिर उठाकर पेड़ की ओर देखा और खिल-खिलाकर जोर से हँस पड़ा, तब बोला–"राजू! प्यादे रुक गये!"

"बेटा! आज यह खुशी कैसी? लगता है कि तुम जीत गये हो?" साधू ने कहा।

"हाँ, साधू महाराज! जीत गया! जीत गया आज आप की मेहर्बानी से! न मालूम मेरी क़िस्मत आज कैसी थी, यह दाँव भी मैं जीत गया। इस बार सौ सोने के मोहरे जीत गया हूँ।" यों उत्तर देकर ठठाकर हँस पड़ा।

साधू ने अपनी हँसी को रोकने की कोशिश करते हुए पूछा–"भगवान, तुम्हें वह धन कैसे चुकायेंगे?"

"भगवान तो कभी भी मुझे खुद धन नहीं चुकाते। उस वक़्त किसी महात्मा के रूप में प्रत्यक्ष हो मुझे पहुँचा देते हैं। आज मेरे भाग्यवश वक़्त पर आप ने मुझे दर्शन दिये हैं।" उस व्यक्ति ने कहा।

ये बातें साधू की समझ में न आईं। उनका चेहरा पीला पड़ गया। तभी उस नये व्यक्ति ने कहा–"आप मुझे चुका दीजिएगा! भगवान का क़र्ज चुक जाएगा!" यों कहते उस दुष्ट दगेबाज पास की झाड़ी में पहले ही छिपाई गई लाठी उठा लाया।

साधू महाराज घबरा गये। देशाटन के समय उनके शिष्यों ने जो कुछ धन भेंट व पुरस्कार में उन्हें समर्पित किये थे, वह सारा धन उस दुष्ट के हाथ सौंपकर खाली हाथ अपने घर की ओर चल पड़े।

राजा शंतनु अपनी पत्नी और पुत्र को खोकर बहुत दुखी हुए । इसके बाद कुछ साल राज्य करने के बाद एक दिन शिकार खेलने निकले और गंगा को देख विस्मय में आ गये । गंगा नदी पतली हो गई थी । थोड़ी दूर पर एक बालक अपनी धनुर्विद्या का परिचय देते हुए बड़ी कुशलता के साथ गंगा की धारा को रोकते बाण चला रहा था । वह बालक देखने में बड़ा आकर्षक लग रहा था ।

राजा शंतनु ने उस बालक को देख अपने मन में सोचा कि यदि वह बालक उनका पुत्र हो तो क्या ही अच्छा होगा । यों विचार करते उसके समीप जाकर पूछा—"बेटा! तुम्हारे पिता कौन हैं? तुम्हारा नाम क्या है?"

बालक ने राजा शंतनु के सवालों का कोई जवाब नहीं दिया, बल्कि वह बाण चलाने में ही निमग्न था । थोड़ी देर बाद वह फिर कहीं चला गया । तब शंतनु ने गंगा की याद की । दूसरे ही क्षण गंगा अपने पूर्व रूप में दिखाई दी । शंतनु ने गंगा से पूछा—"यहाँ पर एक सुंदर बालक दिखाई दिया! उसका परिचय देकर क्या तुम मुझे उसे दिखा सकती हो?"

गंगा ने मुस्कुराकर उत्तर दिया—"वह आठवाँ वसु है । आप ही का पुत्र है! मैं अभी उसे लाकर आप को दिखा देती हूँ । आप उसे स्वीकार कर लीजिए ।" यों समझाकर गंगा ने गांगेय को लाकर शंतनु को दिखाया, तब कहा—"इस बालक ने

वसिष्ठ के यहाँ वेदों का अध्ययन किया है। परशुराम की शुश्रूषा की है। यही आप के वंश का उद्धार करेगा।" यों कहकर गंगा अदृश्य हो गई।

शंतनु ने अपने पुत्र को गले लगाया, अपने रथ पर बिठाकर राजधानी में ले आये। मंत्री तथा पुरोहितों की अनुमति से युवराजा के रूप में उसका अभिषेक किया।

चार साल बीत गये। इसके बाद एक दिन शंतनु शिकार खेलते कालिंदी के तट पर पहुँचे। थकावट के कारण एक पेड़ की छाया में विश्राम कर रहे थे, तभी सुगंधित वायु का उन्हें स्पर्श हुआ।

राजा शंतनु अचरज में आ गये और उस सुगंध की दिशा में आगे बढ़े। थोड़ी देर में उनके सामने अप्सरा जैसी एक युवती आ गई। निश्चय ही उसकी देह से ही खुशबू निकल रही थी। शंतनु ने सोचा कि वह कोई देवता नारी, किन्नर युवती या कोई नाग कन्या होगी, पर मानव कन्या निश्चय ही नहीं है।

यों विचार कर राजा शंतनु ने उसके निकट जाकर पूछा—"तुम कौन हो? तुम्हारे पिता का क्या नाम है? तुम इस जंगल में किसके वास्ते अकेली विचरण कर रही हो? तुम्हारे पति कौन हैं?" यह भी बताया कि उसे देखते ही वे उस पर मोहित हो गये हैं।

उस युवती ने मुस्कुराकर उत्तर दिया—"मैं अविवाहिता हूँ। मेरे पिता दाशराज हैं। वे अभी मुझसे यह कहकर चले गये हैं कि तुम नाव खेती रहो, मैं अभी लौट आता हूँ। वह जो सामने दिखाई देता है, वही उनका घर है।"

"मैं कुरुवंशी राजा हूँ। तुम अपने इस यौवन को क्यों व्यर्थ करती हो? मेरी पत्नी बनकर समस्त प्रकार के सुख भोगो। इस वक़्त मेरे और कोई पत्नी नहीं है। इसके पूर्व एक युवती ने मुझे वरण किया; पर कई प्रलोभन देकर मुझे छोड़कर चली

गई है। इसके बाद मैंने फिर किसी नारी का स्मरण तक नहीं किया है। लेकिन तुम को देखते ही मेरे मन में ऐसी इच्छा पैदा हुई। मैं तुम्हारा दास बनकर रहूँगा। मुझे फिर से एक गृहस्थ बना दो।" राजा शंतनु ने कहा।

शंतनु की बातें सुन वह युवती विचलित हो गई। लजाते हुए बोली—"आप मुझ पर मोहित हुए, मैं भी आप पर आसक्त हो गई हूँ। लेकिन नारियों को अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिए। उनका विवाह तो बुज़ुर्गों को ही करना चाहिए। स्वयं विवाह करके माता-पिता का अपमान नहीं करना चाहिए। इसलिए आप मेरे पिता के सामने अपनी इच्छा प्रकट करके उनकी अनुमति लेकर मेरे साथ विवाह कीजिए।"

उस युवती का कहना राजा शंतनु को समुचित ही लगा, इसलिए उसके पिता के पास जाकर अपनी इच्छा बताने का निश्चय किया।

दाशराजा ने शंतनु को देख दूर से ही प्रणाम किया, फिर आगे बढ़कर विनयपूर्वक कहा—"मैं तो आप का दास हूँ। आप मेरे घर आये, यह मेरे लिए अत्यंत भाग्य की बात है। बताइये, मैं आप की क्या सेवा कर सकता हूँ? आज्ञा दीजिए।"

"अगर तुम्हें कोई एतराज न हो तो मैं तुम्हारी कन्या के साथ विवाह करूँगा। बस, मैं तुम से यही चाहता हूँ।" राजा शंतनु ने कहा। ये बातें सुन दाशराज बड़ा खुश हुआ और बोला—"महाराज, आप मेरी कन्या के साथ विवाह करके मेरे वंश की प्रतिष्ठा बढ़ाना चाहते हैं, तो मुझे इससे बढ़कर और चाहिए ही क्या? फिर भी मेरी एक कामना है, वह यह कि आप के द्वारा मेरी पुत्री के गर्भ से पैदा होनेवाला पुत्र ही आप के अनंतर राजा बने।"

यह बात सुनते ही राजा शंतनु को अपने पुत्र गांगेय की याद हो आई, इस पर उन्हें बड़ा दुख हुआ। तब दाशराजा

के सवाल का कोई जवाब दिये बिना पीछे मुड़कर राजा शंतनु अपने महल को चुपचाप लौट आये। लेकिन उनका मन दाशराज की पुत्री पर ही लगा हुआ था। इस कारण उन्होंने भोजन तक नहीं किया।

उस स्थिति में गांगेय ने अपने पिता को देख पूछा—"पिताजी! आप दुखी क्यों हैं? क्या इसका कारण मुझे बता नहीं सकते? क्या किसी बलवान शत्रु ने आप का सामना किया है? या कोई अनहोनी बात हो गई? मेरे रहते आप को चिंतित होने की क्या आवश्यकता है? बताइये, अगर आप के मन में कोई इच्छा हो तो मैं जरूर उसकी पूर्ति करूँगा।"

अपने पुत्र की बातें सुन राजा शंतनु सकुचा गये और बोले—"बेटा, मेरे तुम अकेले ही पुत्र हो! फिर चिंता क्यों न होगी? कहा जाता है कि एक पुत्र और एक आँख का भरोसा ही क्या है? अकेले पुत्र पर कुछ बीत जाय तो पिता की क्या हालत होगी?"

गांगेय ने मंत्रियों से पूछकर असली बात जान ली और उनको साथ ले दाश राजा के घर पहुँचे, बोले—"महाशय! आप अपनी पुत्री का विवाह मेरे पिता के साथ कर दीजिए। मैं भक्तिपूर्वक आप की पुत्री को माता के रूप में और राजा को पिता के रूप में हमेशा मानता रहूँगा। यही वचन मैं देना चाहता हूँ।"

इस पर दाशराजा ने कहा—"मेरी पुत्री के साथ आप ही विवाह क्यों नहीं करते? आप के रहते मेरी पुत्री के पुत्र के द्वारा राज्य करना न्याय संगत नहीं है।"

"आप अपनी पुत्री को मेरी माता के रूप में दीजिए। उनका पुत्र ही राज्य करेगा।" गांगेय ने फिर पूछा।

"महाशय! आप तो राज्य त्याग सकते हैं। लेकिन इस बात का क्या भरोसा है कि आप का पुत्र मेरे पोते को राज्य देगा?" दाशराजा ने शंका प्रकट की।

"तब तो सुनिये । मैं विवाह ही नहीं करूँगा । ऐसी हालत में मेरे पुत्र कहाँ से होंगे? मेरे बारे में आप को शंका करने की कोई जरूरत नहीं है । आप अपनी पुत्री को मेरी माता के रूप में दे दीजिए ।" गांगेय ने समझाया ।

इस पर दाशराजा ने मान लिया और सत्यवती को राजा शंतनु की पत्नी के रूप में देकर उनका विवाह किया । गांगेय ने विवाह न करने व राज्य की कामना न करने की भीष्म प्रतिज्ञा की, इस कारण गांगेय का 'भीष्म' नाम सार्थक हो गया ।

थोड़े दिन बीत गये । सत्यवती ने शंतनु के द्वारा दो पुत्रों का जन्म दिया । उनके नाम चित्रांगद और विचित्र वीर्य रखे गये । मगर दुर्भाग्य से वे दोनों संतान के बिना ही अकाल मृत्यु के शिकार हो गये ।

इसके बाद विचित्रवीर्य की बड़ी पत्नी अंबिका ने अपनी सास का आदेश पाकर व्यास मुनि के द्वारा एक पुत्र का जन्म दिया । मगर वह बालक धृतराष्ट्र अंधा था । सत्यवती ने सोचा कि धृतराष्ट्र राजा बनने योग्य नहीं है । तब सत्यवती ने अपनी दूसरी बहू अंबालिका को व्यास महर्षि के पास भेजा । अंबालिका ने व्यास के द्वारा एक पुत्र का जन्म दिया । वह पांडु रोग के साथ पैदा होकर पांडु राजा कहलाया ।

इस प्रकार अपने दोनों प्रयत्नों के असफल होते देख सत्यवती ने अंबिका को सलाह दी कि वह व्यास के द्वारा एक और पुत्र का जन्म दे। मगर यह बात अंबिका को पसंद न थी। इस कारण उसने अपनी दासी को व्यास के पास भेजा। दासी के गर्भ से विदुर पैदा हुआ।

थोड़े समय बाद भीष्म ने पांडू को राजा बनाया। पांडु राजा ने विदुर को अपना मंत्री बनाकर राज्य करना प्रारंभ किया। कालक्रम में धृतराष्ट्र ने गांधारी तथा एक वैश्य स्त्री के साथ विवाह किया। गांधारी से सौ पुत्र और वैश्य नारी से उनके एक पुत्र हुए। पांडु राजा ने कुंती और माद्री के गाथ विवाह किया। कुंती के तीन पुत्र और माद्री के दो पुत्र हुए–वे ही पांडव हैं–युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव।

कुंती ने अपने विवाह के पहले सूर्य के द्वारा गुप्त रूप से एक पुत्र का जन्म देकर उसे नदी में बहा दिया था, वही कर्ण है। वह शिशु सूत के हाथ लगा और उसी के घर पला।

पांडवों का जन्म होने के बाद पांडु राजा अपने राज्य को धृतराष्ट्र के हाथ सौंपकर अपनी पत्नियों के साथ वनवास करते वहीं मर गये। माद्री ने उनके साथ सहगमन किया। कुंती पांडवों को साथ ले धृतराष्ट्र के आश्रय में आ गई।

पांचों पांडवों ने राजा द्रुपद की पुत्री द्रौपदी के साथ विवाह करके पुत्र पैदा किये। अर्जुन ने श्रीकृष्ण की बहन सुभद्रा के साथ विवाह करके अभिमन्यु का जन्म दिया। अभिमन्यु जब महाभारत के युद्ध में काम आये, उस वक़्त उनकी पत्नी उत्तरा गर्भवती थी और बाद को परीक्षित का जन्म दिया।

महाभारत युद्ध में अपने सारे पुत्रों के मरने के बाद धृतराष्ट्र और गांधारी युधिष्ठिर के पास लौट कर वहीं रह गये। युधिष्ठिर ने उनका बड़ा आदर किया, पर
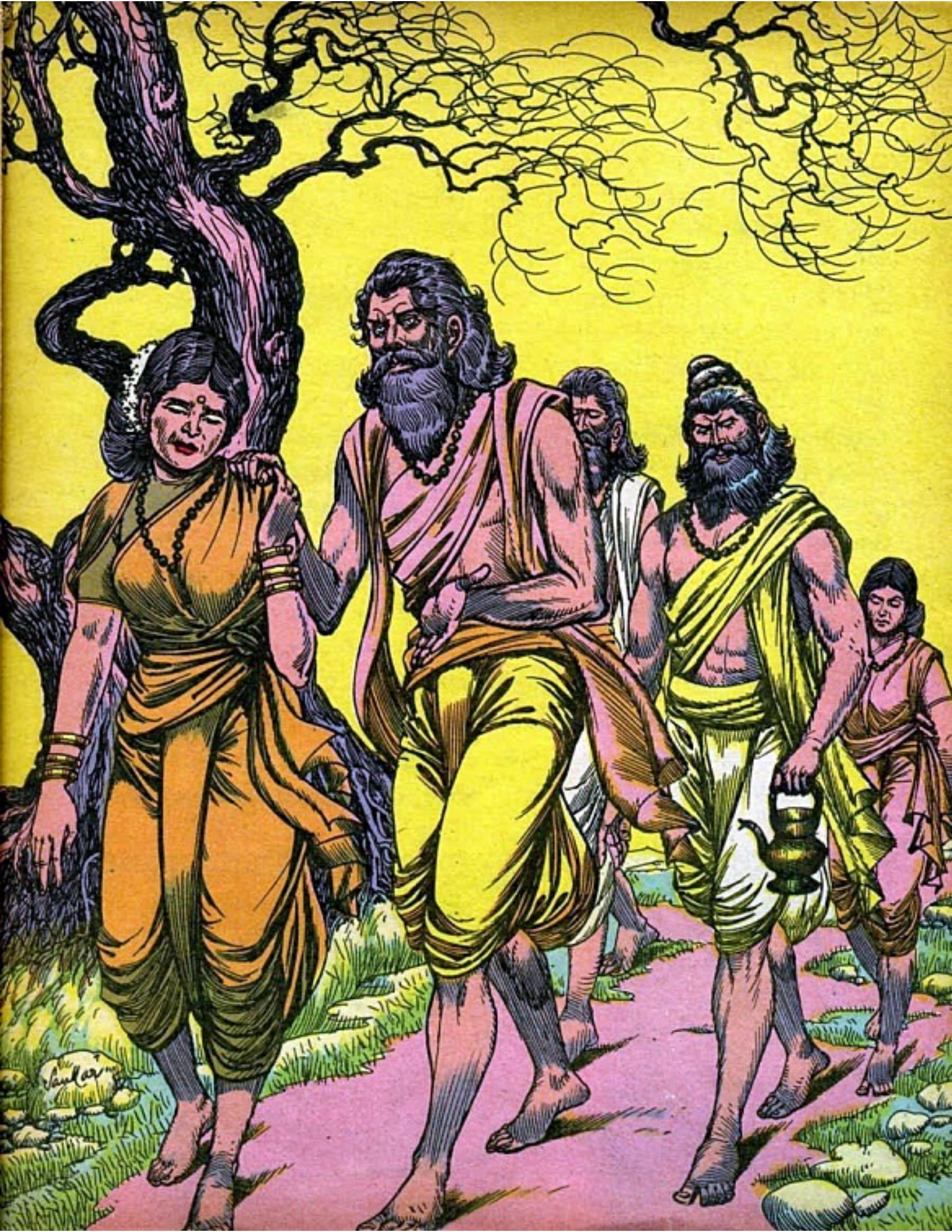
भीमसेन ने ताने देकर क़दम क़दम पर उनका अपमान किया।

अंत में धृतराष्ट्र गांधारी, विदुर और संजय को साथ ले वानप्रस्थ में चले गये। कुंती भी उस समय उनके साथ चली गई। इस प्रकार छे साल बीत गये। एक दिन युधिष्ठिर ने सपना देखा। कुंती उन्हें बहुत ही दुबली दिखाई दीं। युधिष्ठिर ने अपने छोटे भाइयों को अपने सपने का वृत्तांत सुनाकर बताया कि वे धृतराष्ट्र, गांधारी, कुंती आदि को देखना चाहते हैं।

सब ने मान लिया। इस पर पांडव द्रौपदी, सुभद्रा, उत्तरा तथा नगर के नागरिकों को साथ ले शतयूपाश्रम में गये। वहाँ पर धृतराष्ट्र, गांधारी व कुंती थे, मगर विदुर न थे, धृतराष्ट्र ने बताया कि विदुर एकांत में तपस्या कर रहे हैं।

इस पर युधिष्ठिर विदुर को खोजते गंगा के तट पर चले गये। एक जगह विदुर को भयंकर तपस्या करते देख युधिष्ठिर ने अपना नाम बताया और उन्हें प्रणाम किया। मगर विदुर ने कोई जवाब नहीं दिया। लेकिन उसी वक़्त विदुर के मुँह से कोई तेज़ निकल आया और युधिष्ठिर के मुख में प्रवेश कर गया। विदुर निस्तेज हो गिर पड़े।

इसके बाद युधिष्ठिर धृतराष्ट्र के यहाँ लौट आये, विदुर की मृत्यु का वृत्तांत उन्हें सुनाया। थोड़े दिन उनके साथ आश्रम में बिता कर अपने परिवार के साथ हस्तिनापुर को लौट आये।

इसके थोड़े दिन बाद धृतराष्ट्र, गांधारी और कुंती दावानल में फंस कर भस्म हो गये। संजय इसके पहले ही किसी तीर्थ में मर गये थे।

अब कौरव और पांडव वंश में केवल परीक्षित बच गये थे। वे भी एक मुनि के शाप के कारण तक्षक के काटने से मर गये। परीक्षित के पुत्र ने अपने पिता की मृत्यु का प्रतिकार करने के ख़्याल से सर्पयाग किया और अनेक सर्पों को अग्नि की आहुति कराई, अंत में अपना यज्ञ समाप्त किया।

साधुओं से सावधान

राधाबाई रसोई घर में खाना पका रही थी, तभी उसे यह पुकार सुनाई दी–"माईजी! माईजी!" राधाबाई ने बाहर आकर देखा। वहाँ पर एक औरत एक बच्चे को गोद में लेकर खड़ी हुई थी। राधाबाई ने बताया–"बहन, अभी रसोई नहीं बनी है। थोड़ी देर बाद आ जाओ।"

"माईजी! मैं भीख माँगने नहीं आई हूँ। मैं श्रीनिवासपुर की निवासिनी हूँ। मेरा नाम गौरी है। चार दिन पहले मेरे पति खेत से घर लौट रहे थे। तब एक भील पिशाच उसमें प्रवेश कर गया। इसलिए उसके पेट में दर्द शुरू हो गया। हमने कई वैद्यों को बुलवाकर दवा-दारू कराया, मगर कोई फ़ायदा न हुआ। उल्टे खून उगलने लगा। सवेरे देवता जैसे एक साधू महात्मा मेरे घर आये। उन्होंने सिर्फ़ मंत्र फूंके, फिर क्या था, उनका दर्द जाता रहा। उस साधू महात्मा को हमने पैसे देना चाहा, मगर वे लिये बिना ही चले गये। कल फिर उन्हें पेट में दर्द शुरू हुआ। मेरे गाँववालों ने बताया कि वे साधू महाराज इस गाँव में आये हैं, मैं आज सवेरे से उन्हें खोज रही हूँ। मगर वे दिखाई नहीं दे रहे हैं। माईजी, अगर वे कहीं आप को दिखाई दे तो कृपया मेरे घर भिजवा दीजिए।" गौरी बोली।

"अच्छी बात है!" यों वचन देकर राधाबाई घर के भीतर चली गई।

इसके बाद राधाबाई रसोई समाप्त कर आराम कर रही थी, तभी बाहर से यह पुकार सुनाई दी–"माई, अन्नपूर्णेश्वरी!"

राधाबाई ने जाकर किवाड़ खोले, बाहर एक साधू खड़े थे। उसे गौरी की बात याद हो आई। साधू से पूछा–"साधू महाराज! क्या आप गौरी को जानते हैं?"

वीरेन्द्र त्रिपाठी

"माईजी! कौन गौरी?" साधू ने पूछा।

"सुनते हैं कि वह श्रीनिवासपुर की निवासिनी है, उसके पति को भील पिशाच ने ग्रस लिया था जिसे आप ने छुड़ा लिया था। फिर से उसके पति को सर दर्द हो गया है। इसलिए वह साधू की खोज में आई थी!" राधाबाई ने कहा।

"हाँ, हाँ, मुझे याद हो आया। आज इसी गाँव में मेरा थोड़ा-सा काम है। मैं कल जाऊँगा।" साधू ने जवाब दिया।

साधू पर राधाबाई के मन में विश्वास जम गया। उसने साधू को अन्दर बुलाकर अपनी समस्या उनके सामने रखी।

साधू ने सारी बातें शांति से सुनकर कहा–"बेटी, तुम अपनी शादी के बाद जब ससुराल आई, एक दिन अपने पति के वास्ते तुम खेत पर खाना ले जा रही थी। उस वक़्त तुमने एक बरगद के नीचे किसी के द्वारा मंत्र फूंककर फेंक गये ताबीज़ को पार किया, उसी रात को तुम्हें बुखार चढ़ आया, दस दिन तक तुम परेशान रही, इसी कारण तुम्हें कोई संतान नहीं हो रही है। तुम तंत्र लगवा लो, तुम्हें ज़रूर संतान होगी।"

इसके बाद साधू ने कई चीज़ों की एक सूची दी। राधाबाई ने उसी वक़्त वे सारी चीज़ें मँगवाईं। साधू ने हल्दी, कुंकुम आदि के साथ यंत्र तैयार किये, उन पर एक पीढ़ा डालकर राधाबाई को बिठाया, मंत्र-पठन करते नींबू काटे, सर पर उन्हें घुमाकर नारियल फोड़ा, तब उसका पानी राधाबाई के सर पर झिड़क दिया। थैली में से एक तावीज़ निकालकर उसके माथे पर रखा, तब कपूर की आरती उतारी। कपूर की गंध के लगते ही राधाबाई को लगा कि वह बेहोश हो रही है। साधू ने ताबीज़ को उसके गले में बांधते हुए सोने की माला को निकाला। राधाबाई निश्चल रह गई। फिर जब साधू ने राधाबाई के सर पर पानी

छिड़का, तब उसकी बेहोशी जाती रही। "माई! अब तुम्हें ज़रूर संतान होगी!" यों कहकर साधू ने मंत्र फूंकी गई चीज़ों को अपने झोले में डाल लिया। राधाबाई भीतर जाकर पच्चीस रुपये ले आई। साधू ने मना करते हुए वे रुपये ले लिये। तब बाहर चले गये।

इसके बाद राधाबाई बड़ी तृप्ति के साथ अपनी होनेवाली संतान के बारे में विचार करते सो गई। थोड़ी देर बाद अपने पति की पुकार सुनकर नींद से जाग उठी और दर्वाजा खोल दिया। सोमवर्मा ने घर में क़दम रखते ही अपनी पत्नी के बदन पर हल्दी-कुंकुम देख कारण पूछा। राधाबाई ने सारी बातें कह सुनाई।

सोमवर्मा ने मजाक़ करते हुए कहा— "सबका अपना-अपना पागलपन होता है! इसे कौन बदल सकता है?"

उस दिन रात को भोजन करने के बाद सोमवर्मा आराम करने के ख्याल से खाट पर लेट गया। राधाबाई पान बनाकर दे रही थी, उस वक़्त उसके कंठ में ताबीज़ देख उसे हाथ में ले परखकर पूछा—"क्या यही तावीज़ तुम्हें बच्चे देनेवाली है?"

"तुम को तो हर चीज़ में मजाक़ सूझता है।" यों कहते राधाबाई ने अपना कंठ टटोलकर देखा। उसके हाथ माला नहीं लगी। उसका चेहरा एक दम पीला पड़ गया। झट उसने घर के अन्दर जाकर सारा घर ढूंढा, माला दिखाई नहीं
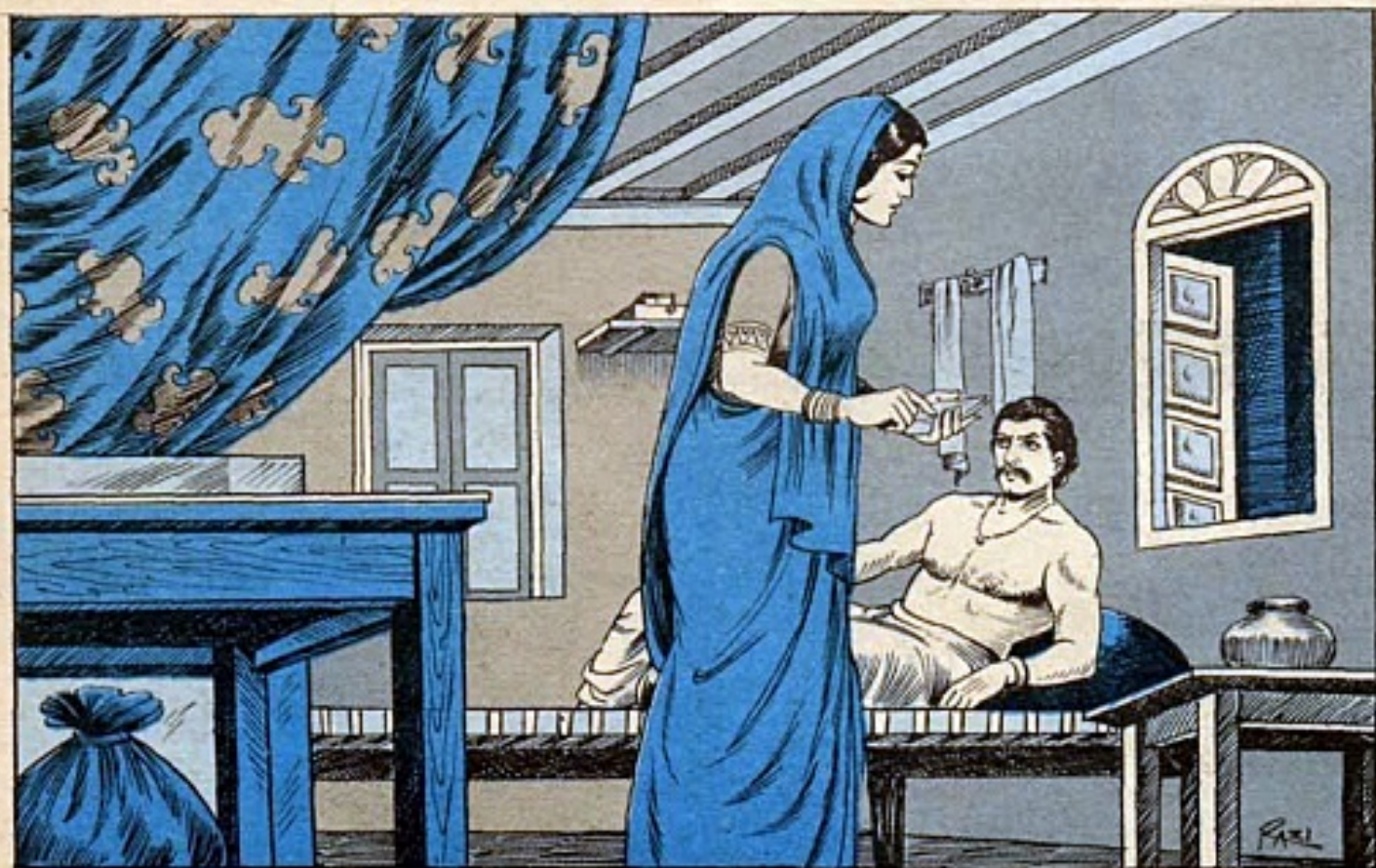
दी। तब अपने पति को खाट पर से उठवाकर सारा बिस्तर झाड़कर देखा।

उसकी घबराहट देख सोमवर्मा ने पूछा—"तुम ढूंढती क्या हो?"

राधाबाई ने आँखों में आँसू भरकर कहा—"मेरी माला दिखाई नहीं देती।"

"तुमने आखिर कहाँ रखी?" सोमवर्मा ने गरजकर पूछा।

"आज सवेरे तैल स्नान करके फिर गले में पहन ली थी।" राधाबाई ने रोते हुए जवाब दिया।

तब जाकर सोमवर्मा को साधू पर संदेह हुआ। उसने सारे गाँव में साधू की खोज की। पर कहीं उसका पता न चला। गाँव की उत्तरी दिशा में एक मील की दूरी पर एक उजड़ा हुआ मंदिर था। वहाँ पर भी साधू को ढूंढने के ख्याल से अपने एक नौकर को साथ ले उसी वक़्त सोमवर्मा चल पड़ा।

मंदिर तक पहुँचते-पहुँचते खूब अंधेरा फैल गया था। मंदिर की सीढ़ियों पर एक छोटा-सा बच्चा बैठा था। सोमवर्मा को ऐसा लगा कि कोई औरत मंदिर के एक कोने में खाना पका रही है।

इतने में कोई शराब के नशे में गाते हुए आता दिखाई पड़ा। सोमवर्मा और उसका नौकर मंदिर की दीवार के पीछे छिप गये। शराबी अपने हाथ की बोतल नीचे रखकर बोला—"अरी देखो तो मैं तुम्हारे लिए क्या लाया हूँ?" यों कहते उसने माला निकालकर उसे दिखाई।

दूसरे ही क्षण सोमवर्मा और उसके नौकर ने शराबी पर आक्रमण करके माला छीन ली और उसे खूब पीटा। शराबी का नशा उतर गया, उसने सोमवर्मा के पैरों पर गिरकर माफ़ी माँगी।

इसके बाद सोमवर्मा घर लौट आया। राधाबाई को माला लौटाते हुए पूछा—"जब साधू तुम्हारे गले से माला निकाल रहा था, तब तुम्हारी अक़्ल कहाँ चरने गई थी?" पर ये शब्द सुनने के बाद राधाबाई एक दम अवाक् रह गई।

सदुपयोग

गोविंद नारायण अमीर ज़रूर है, लेकिन अव्वल दर्जे का कंजूस है। वह अपनी पत्नी से तंग आकर तीर्थाटन के लिए चल पड़ा। चलते वक्त घर की जिम्मेदारी वह अपने बेटे शिवराम को सौंप गया। उस मकान के अहाते में कोई कुआँ न था। शिवराम ने अपने पिता को कई दफ़े समझाया कि हम पिछवाड़े में एक कुआँ खुदवा लेंगे तो अच्छा होगा। मगर गोविंद नारायण रुपये खर्च करना नहीं चाहता था, इस कारण वह टालता गया।

पिता ने बिलकुल मना तो नहीं किया है। यों विचार कर शिवराम ने अपने घर के पिछवाड़े में कुआँ खुदवाना शुरू किया। दो फुट गहराई तक खोदते खोदते एक तिजोरी दिखाई दी। उसमें धन और सोना भरा हुआ था।

मजदूरों ने बताया—"सरकार! यह धन आप के पुरखों का होगा। वे तो पुण्यात्मा होंगे। यह धन हम जैसे गरीबों में बांटकर पुण्य कमाइयेगा।"

शिवराम उदार स्वभाव का व्यक्ति था। इसलिए उसने धन और सोना गरीबों में बांट दिया। गोविंद ने तीर्थाटन से लौटकर कुआँ देखा; उसने बेटे से पूछा कि मैंने इस जगह तो धन गाड़कर रखा था। वह धन कहाँ है? शिवराम ने सारा वृत्तांत सुनाया। कंजूस का दिल बैठ गया। उसने वहाँ पर धन गाड़ने की बात अपनी पत्नी तक को बताई न थी।

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार २५)

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ जुलाई १९७९ के अंक में प्रकाशित की जायेंगी।

M. Natarajan

★

Devidas Kasbekar

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्दों की हों और परस्पर संबंधित हों।

★ मई १० तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए, उसके बाद प्राप्त होनेवाली परिचयोक्तियों पर विचार नहीं किया जाएगा।

★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) २५ रु. का पुरस्कार दिया जाएगा।

★ दोनों परिचयोक्तियाँ कार्ड पर लिखकर (परिचयोक्तियों से भिन्न बातें उसमें न लिखें) निम्नलिखित पते पर भेजें: चन्दामामा फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता, मद्रास-२६

मार्च के फोटो-परिणाम

प्रथम फोटो : जब गूंज उठी शहनाई !

द्वितीय फोटो : तबले ने धाक् जमाई !!

प्रेषक : नरेश सूद, W Z-68/B मीनाक्षी गार्डन, नई दिल्ली - १८

पुरस्कार की राशि रु. २५ इस महीने के अंत तक भेजी जाएगी।

Printed by B. V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for CHANDAMAMA CHILDREN'S TRUST FUND (Prop. of Chandamama Publications) 2 & 3, Arcot Road, Madras-600 026 (India). Controlling Editor : NAGI REDDI.

The stories, articles and designs contained herein are exclusive property of the Publishers and copying or adopting them in any manner will be dealt with according to law.

राजू बिना ब्रश के पेंटिंग करता है

राजू बहुत होशियार लड़का था. उसे पेन्टिंग करना बहुत अच्छा लगता था. लेकिन पेन्टिंग करते वक्त उससे पानी गिर जाता था और फर्श गन्दा हो जाता था. उसके कपड़े और हाथ भी रंग जाते थे.

माँ को उसकी हरकतें पसन्द नहीं थीं. इसलिए उन्होंने पेन्टिंग करना मना कर रखा था.

मोहन को राजू पर तरस आया. उसने राजू को अपने 'ऑइल पेस्टल' के डिब्बे दिखाये. न पानी की ज़रूरत, न ब्रश की. न पानी फैलने का डर, न फर्श खराब होने का.

डिब्बे से किसी भी रंग का पेस्टल उठाओ और चित्र बनाना शुरू कर दो...और रंग भी कितने सारे! पैरट ग्रीन, लॉब्स्टर ऑरेन्ज, पीकॉक ब्लू, सनफ्लावर यलो... और भी न जाने कितने.

फिर तो राजू की माँ ने भी उसे ऑइल पेस्टल का एक डिब्बा ला दिया.

VISION 792 HIN

कॅमल
ऑइल पेस्टल्स

१२, २४ और ४८ रंगों में उपलब्ध

कॅम्लिन प्रायव्हेट लि.
आर्ट मटीरियल डिविजन,
बम्बई - ४०० ०२९.

कॅम्लिन अनब्रेकेबल पेन्सिल बनानेवालों की ओर से

Results of Chandamama–Camlin Colouring Contest No. 7 (Hindi)

1st Prize: Sunta Rani, Amritsar. *2nd Prize*: Deepak Verma, Agra. *3rd Prize*: K. Nisha Tripathi, Udaipur. *Consolation Prizes*: Meera Khialdas K. Ulhasnagar. Priti Mathur, Jaipur. K. Raja Sekar, Hyderabad. Ruby Jimmy Karbhoy, Bilaspur. V. Lalitha, Lucknow.

चन्दामामा के ग्राहकों को सूचना

यदि आप अपना पता बदल रहे हों, तो पांचवीं तारीख से पहिले ही अपनी ग्राहक-संख्या के साथ, अपना नया पता सूचित कीजिये। यदि विलम्ब किया गया, तो अगले मास तक हम नये पते पर 'चन्दामामा' न भेज सकेंगे। आपके सहयोग की आशा है।

डाल्टन एजन्सीस

मद्रास - ६०० ०२६

लेखकों की ललक - MPF निशान वाली पैन्सिलें !

हार्ड या सॉफ़्ट ... 'टिप' सहित या रहित ... सजीले डिज़ाइन वाली या सादी ... एम पी एफ़ निशान है, तो बढ़ियापन की गारन्टी है!

दि मद्रास
पैन्सिल फ़ैक्टरी
15, सिंगाराचं स्ट्रीट, मद्रास 600 001.

प्रसिद्ध 'मर्करी' पैन्सिलों के निर्माता

ज़िन्दगी की सुहानी चीज़ों की तरह
हमेशा ताज़ा, हमेशा सजीव!

CP-1829

'हाय ! क्या ग़ज़ब का स्वाद.'

गोल्ड स्पॉट—स्वाद की गवाही, मुस्कुराहट बन के आई

DADDY
MUMMY
AND...
I
"ये सब मैंने अपने एको स्केच पेनसे बनाये हैं।"
EKCO
स्केच पेन
रंग ही रंग... जिनसे बच्चों को प्यार है. वे चाहते हैं—नित नये चित्र बनाना.
अपने बच्चों की सुप्त कला को प्रोत्साहन दीजिए... उन्हें एको स्केच पेन का आकर्षक सेट उपहारस्वरूप दीजिए.
ये कई मनपसंद रंगों में मिलते हैं.
EKCO
SKETCH PEN
FOR
SKETCHING
COLOURING • SIGNING
वितरक :
किरण एण्ड कंपनी,
७३/८, शामसेट स्ट्रीट, बम्बई ४०० ००२
फोन : ३२४४३२
एको स्केच पेन से लिखने का मज़ा ही कुछ और है.
ADVERTS/WP/216/HIN/G8

नन्हें मुन्ने
प्यार चाहते, प्यार मिले तो बढ़ते जाते

PARLE
Gluco
BISCUITS

प्यार का उपहार
पारले ग्लुको—
स्वाद में निराले
शक्ति से भरपूर

दूध, गेहूं, शक्कर और ग्लूकोज़ के
स्वाद और पौष्टिक गुणों से भरपूर.

पारले
ग्लुको
भारत के सबसे ज़्यादा बिकनेवाले बिस्किट
—वर्ल्ड एवॉर्ड विजेता